

दिशा

गृह पत्रिका, अंवि./इसरो मु.



भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन, मुख्यालय
अंतरिक्ष विभाग, भारत सरकार

'रॉकेट मैन' कै. शिवन

बी.एम.ए. विशिष्ट जूरी अवार्ड 2018-19 से सम्मानित



इसरो अध्यक्ष डॉ. कै शिवन को विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के विकास तथा उनके विशिष्ट प्रगतिशील नेतृत्व के लिए बी.एम.ए. विशिष्ट जूरी अवार्ड से सम्मानित किया गया है।

भारत सरकार

अन्तरिक्ष विभाग

अन्तरिक्ष भवन, न्यू बी ई एल रोड
बेंगलूर - 560 094. भारत

तार : स्पेस फ़ैक्स : +91-80-2351 1829
दूरभाष : +91-80-2341 6393



GOVERNMENT OF INDIA DEPARTMENT OF SPACE

Antariksh Bhavan, New BEL Road
Bangalore - 560 094, India.

Grams : Space Fax : +91-80-2351 1829
Telephone : +91-80-2341 6393
e-mail : sandhyavs@isro.gov.in

संध्या वेणुगोपाल शर्मा, भा.प्र.से.

Sandhya Venugopal Sharma, IAS

संयुक्त सचिव / Joint Secretary

संदेश

अंतरिक्ष विभाग/इसरो की गृह-पत्रिका "दिशा" अधिकारियों / कर्मचारियों एवं उनके परिवारजनों की प्रतिभा को उजागर करने का एक महत्वपूर्ण मंच बनती जा रही है। इससे हिंदी के प्रचार-प्रसार में योगदान हो रहा है।

आशा है, इसमें छपे लेखों, आदि से पाठकगण विविध विषयों की जानकारी पा सकेंगे। मैं इस पत्रिका के कार्य से जुड़े सभी को हार्दिक शुभकामनाएं देती हूँ।

(संध्या वेणुगोपाल शर्मा)
संयुक्त सचिव, अं.वि

संपादक की कलम से.....



'दिशा' का ग्यारहवां अंक आपको सौंपते हुए बड़े हर्ष का अनुभव हो रहा है। 'दिशा' की उत्तरोत्तर बढ़ती लोकप्रियता, आप सभी के सक्रिय सहयोग और योगदान का परिणाम है। आशा है भविष्य में भी हमें आपका सहयोग और स्नेह मिलता रहेगा।

इसी आकांक्षा के साथ.....

A handwritten signature in blue ink, appearing to read 'प्र.के. जैन'.

(डॉ. पी.के. जैन)

मुख्य संपादक, 'दिशा'



विभाग की गृह पत्रिका का अगला अंक आप सबके समक्ष प्रस्तुत है। अपने हर अंक में हम यह प्रयास करते हैं कि पिछले अंक से बेहतरीन संस्करण पाठकों को मिले। इस अंक में भी लेखों के विविध स्वरूप को प्रस्तुत किया गया है। संपादक मंडल बड़ी मेहनत से यह कोशिश करते हैं कि पाठकों को पत्रिका में छपे प्रत्येक लेख का आनंद प्राप्त हो। इस बार भी पत्रिका में ऐसे अनेक विषयों का समावेश किया गया है, जिससे कि पाठकगण संपूर्ण रूप से इसे पढ़ने के बाद संतुष्ट हो सकेंगे।

सभी से अनुरोध है कि इस पत्रिका को और अधिक बेहतरीन बनाने के लिए अपने बहुमूल्य सुझाव हमें अवश्य भेजे।

शुभकामनाओं सहित

5/7/2011

(सरला)
संयुक्त निदेशक (रा.भा.)



अंतरिक्षविभागकीगृह-पत्रिका

मुख्य संरक्षक

डॉ. कै. शिवन

संरक्षक

श्रीमती संध्या वेणुगोपाल शर्मा

संपादक मंडल

मुख्य संपादक

डॉ. पी.के. जैन
सरला

संपादक सदस्य

डॉ. राजीव जायसवाल
बिपुल दास
डॉ. महेश्वर घनकोट

संपादन सहयोग

शत्रुघ्न सिंह
रश्मि ठाकुर
अम्बिका द्विवेदी
वीणा गुणवंत माटे
गुरुप्रसाद यादव
प्रत्युष कुमार
निशांत कुमार शर्मा
जीवन कुमार सिन्हा

अपना सुझाव एवं प्रतिक्रिया भेजें

संपादक मंडल, दिशा
अंतरिक्ष विभाग/इसरो मु.
अंतरिक्ष भवन
न्यू बी.ई.एल. रोड, बेंगलूरु-560231
E-mail: hindisection@isro.gov.in

इस अंक में...

पृ.सं.

प्रेरणा

- लाख दुःखों की एक दवा है हँसी 20
- सकारात्मक विचार 33

लेख

- रॉकेट मैन - डॉ. कै. शिवन 01
- बरमुडा त्रिकोण का रहस्य 03
- हमें अपने घर जाना है 07
- गाँठें : कुछ उलझी, कुछ सुलझी 14
- ईमानदारी की विवशता 17
- भारत की धरोहर 35

स्वाद

- मूली का पराठा 25

कविता

- जीवन 06
- कोरोना 10
- मूशिकल बड़ी घड़ी है 19
- खग ! उड़ते रहना जीवन भर 22
- ये गृहणियाँ भी थोड़ी पागल सी होती है 23
- मुँह पैसों का 24
- गर इजाजत हो 27
- प्रकृति 31
- समय 32
- शून्य 34

आध्यात्म

- कर्ण की व्यथा 11
- हमारी संस्कृति 30

साहित्य

- शिल्पपादिकम् : एक परिचय 28

राजभाषा : महत्वपूर्ण गतिविधियाँ

38

प्रतिक्रिया

46

पुरस्कार

- उत्कृष्ट रचनाओं के लिए पुरस्कार 36

पत्रिका में अभिव्यक्त विचारों और मतों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है। हिंदी अनुभाग, अंतरिक्ष विभाग/इसरो मु. की अनुमति के बिना इस पत्रिका की कोई भी रचना किसी प्रकार से उद्धृत नहीं की जानी चाहिए।

केवल आंतरिक परिचालन के लिए

रॉकेट मैन - डॉ. कै. शिवन



श्री गोविंदराज वी.
एस.सी.डी.-ए, इसरो मु.

प्रारंभिक जीवन

डॉ. कै. शिवन का जन्म 14 अप्रैल 1957 को हुआ। उनके पिता का नाम कैलासा कैलासा वडिवू है। वे एक किसान हैं और उनकी माता का नाम चेल्लम है। एक किसान का बेटा होने के बावजूद डॉ. शिवन का इस तरह ऊँचाइयों पर पहुंचना आसान नहीं था। इस महान व्यक्ति की कहानी की शुरुआत होती है 14 अप्रैल 1957 को, जब तमिलनाडु के नागरकोइल शहर के पास बसे एक छोटे से गांव में इनका जन्म हुआ। इनके घर की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी। इनके पिता के पास महज एक एकड़ जमीन थी और वे उसमें खेती करके परिवार के छह लोगों का गुजारा करते थे।

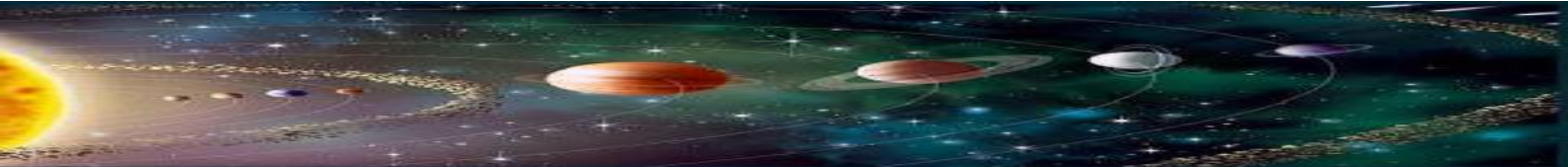
हालांकि, डॉ. कै. शिवन के पिता को यह समझ में आ गया था कि जब तक उनके बच्चे पढ़ाई नहीं करेंगे तब तक उनकी और उनके बच्चों की आर्थिक स्थिति ऐसी ही खराब रहेगी और इसलिए खुद दिन-रात कड़ी मेहनत की और बच्चों को स्कूल भेजा। स्कूल से छुट्टी मिलने के बाद शिवन जी अक्सर खेती में अपने पिता का हाथ बँटाया करते थे।

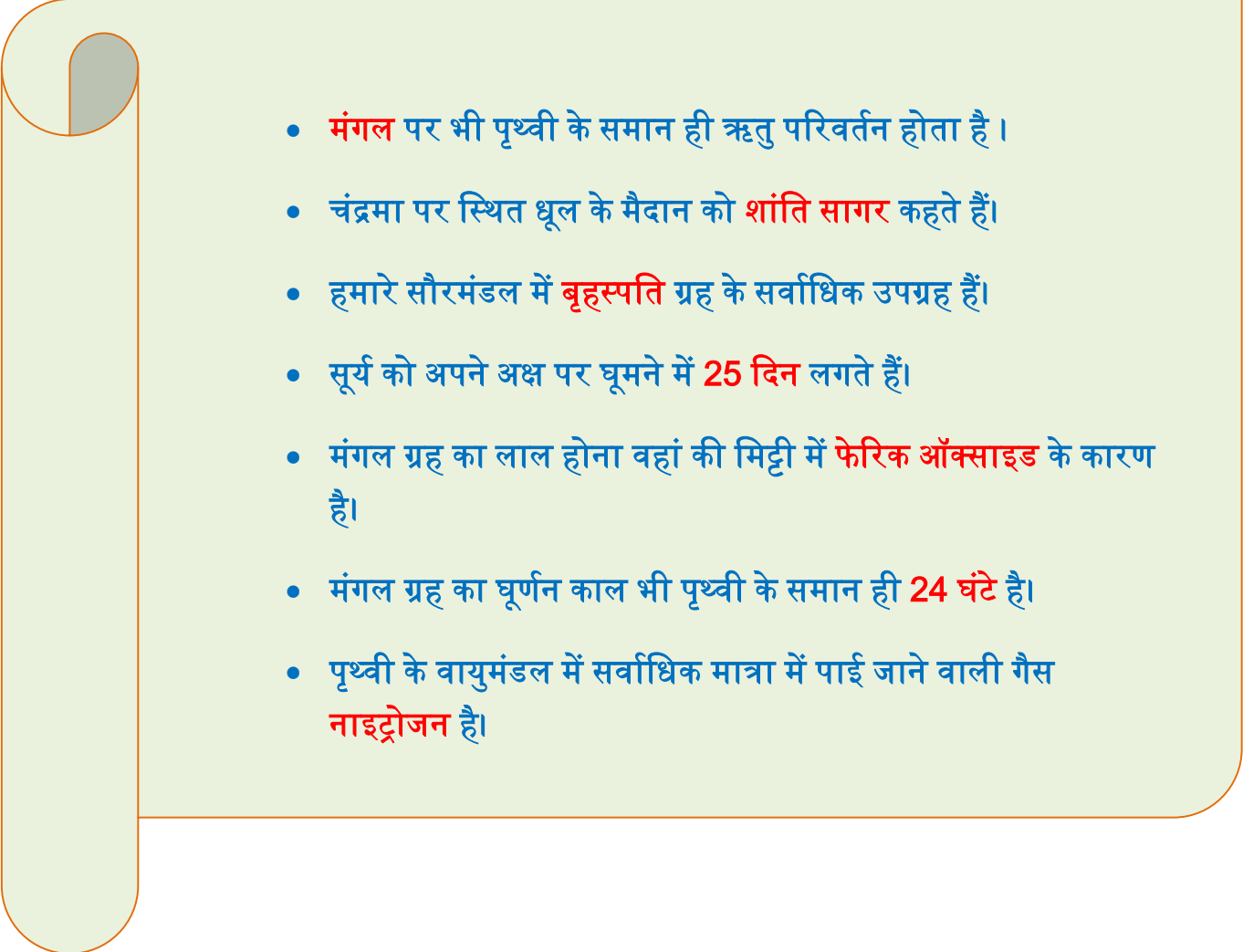
पुरस्कार और उपलब्धियाँ

डॉ. कै. शिवन मद्रास इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी से स्नातक होने के बाद वर्ष 1982 में भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) में शामिल हुए। नौकरी में रहते हुए उन्होंने 2006 में आई.आई.टी. मुंबई से एयरोस्पेस इंजीनियरिंग में डॉक्ट्रेट की उपाधि (पी.एच.डी.) अर्जित की। वे इंडियन नेशनल एकेडमी ऑफ इंजीनियरिंग, एयरोनॉटिकल सोसाइटी ऑफ इंडिया और सिस्टम सोसाइटी ऑफ इंडिया के फेलो सदस्य हैं।

डॉ. कै. शिवन को निम्नलिखित पुरस्कार प्राप्त हुए हैं :

- डॉ. विक्रम साराभाई रिसर्च अवार्ड-1999 तथा इसरो मेरिट अवार्ड- 2007
- बिरेन रॉय अंतरिक्ष विज्ञान पुरस्कार- 2011
- मद्रास इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एलुमनी एसोसिएशन चेन्नई से सम्मानित पूर्व छात्र पुरस्कार (2013)
- भारतीय विज्ञान संस्थान, बेंगलूर, पूर्व छात्र पुरस्कार

- 
- 2014 में चेन्नई के सत्यभामा विश्वविद्यालय से डॉक्टर ऑफ साइंस (ऑनोरिस कॉसा)
 - तमिलनाडु सरकार द्वारा डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम पुरस्कार- 2019
 - बी.एम.ए., मुंबई स्पेशल ज्यूरी रिकग्नीशन एवार्ड- 2018-19।

- 
- **मंगल** पर भी पृथ्वी के समान ही ऋतु परिवर्तन होता है।
 - चंद्रमा पर स्थित धूल के मैदान को **शांति सागर** कहते हैं।
 - हमारे सौरमंडल में **बृहस्पति** ग्रह के सर्वाधिक उपग्रह हैं।
 - सूर्य को अपने अक्ष पर घूमने में **25 दिन** लगते हैं।
 - मंगल ग्रह का लाल होना वहां की मिट्टी में **फेरिक ऑक्साइड** के कारण है।
 - मंगल ग्रह का घूर्णन काल भी पृथ्वी के समान ही **24 घंटे** है।
 - पृथ्वी के वायुमंडल में सर्वाधिक मात्रा में पाई जाने वाली गैस **नाइट्रोजन** है।

बरमुडा त्रिकोण का रहस्य

श्री निशांत कुमार शर्मा
हिंदी टंकक, अं.वि.



आधुनिक युग विज्ञान का युग कहा जाता है, जहाँ अंधविश्वास व चमत्कारी घटनाओं के लिए कोई स्थान नहीं है। वर्तमान समय में विज्ञान ने विभिन्न क्षेत्रों में अद्भुत क्रांति की है। आज विज्ञान के पास हर जटिल से जटिल प्रश्न का उत्तर प्रमाणिकता के साथ खोजने की ताकत है। इसने प्रकृति में हो रही अधिकांश घटनाओं के पीछे होनेवाले कारण व उसके रहस्यों को अपने तर्क एवं सबूतों के आधार पर उजागर किया है। परन्तु, इन सब के बावजूद प्रकृति में आज भी कई रहस्य ऐसे हैं जिनका पता विज्ञान पूरी तरह से नहीं लगा पाया है। इन्हीं रहस्यों में से एक है- 'बरमुडा त्रिकोण'।



इस काल्पनिक त्रिकोण के बारे में अब तक विश्व भर के वैज्ञानिक स्पष्ट व सटीक जानकारी नहीं जुटा सके हैं, क्योंकि इस त्रिकोण का एक भयानक सच यह है कि हमारी धरती पर स्थित यह एक ऐसी समुद्री जगह है जहाँ जाकर कोई भी वापस नहीं लौट पाता, तो उसका किसी भी प्रकार का प्रमाण कैसे प्राप्त होगा और बिना साक्ष्य और सबूतों के वैज्ञानिक विश्लेषण की कल्पना करना भी बेमानी है।

आइए, सर्वप्रथम हम यह जानने का प्रयास करते हैं कि आखिर बरमुडा त्रिकोण है क्या? यह संयुक्त राज्य अमेरिका के दक्षिण-पूर्व अटलांटिक महासागर के अक्षांश 25 डिग्री से 45 डिग्री उत्तर तथा देशान्तर 55 से 85 डिग्री के बीच फैले 39,000 वर्ग कि.मी. के बीच फैला एक ऐसा सागरीय स्थान है, जो कि एक काल्पनिक त्रिकोण या त्रिभुज जैसा दिखाई पड़ता है। इसलिए इस स्थान को बरमुडा त्रिकोण का नाम दिया गया है। इस त्रिकोण के तीन कोने, बरमुडा, मियामी तथा सेना जआनार, पोर्टोरीको को स्पर्श करते हैं। इस क्षेत्र में सन् 1854 से ही ऐसी दुर्घटनाएं होती रही हैं, जिनके कारण इसे 'मौत का त्रिकोण' भी कहा जाता है। कुछ लोगों का दावा है कि ये गायब होने की बातें मानव त्रुटि या प्रकृति के कृत्यों की सीमाओं से परे हैं। उन्होंने इन घटनाओं को असामान्य मानते हुए धरती से परे जीवित वस्तुओं की गतिविधियों से सम्बद्ध बताया। हालाँकि, बाद के लेखकों द्वारा अस्पष्ट रूप से सूचित या सृजित अनेक दस्तावेज उपलब्ध हैं, जो इस घटना के वैज्ञानिक कारण होने

का दावा करते हैं और अनेक सरकारी एजेंसियों ने समुद्र में इन जैसे कुछ क्षेत्रों में अदृश्य घटनाओं के घटित होने की प्रकृति पर कार्य किया है, परन्तु यथोचित जाँच के बाद भी इस दिशा में अनेक बिन्दु अवर्णित रह गए हैं, जिसके फलस्वरूप इस घटना के अलौकिक होने को कहीं न कहीं बल अवश्य मिला है।

बरमुडा त्रिकोण सर्वप्रथम इस समय विश्व पटल पर चर्चा का विषय बन गया, जब 1964 में



'अगौसी पत्रिका' में इस पर लेख प्रकाशित हुआ। जिस पर उस समय के प्रख्यात लेखक विन्सेंट एच. गौडिस ने काफी कुछ लिखा था। इसके बाद से लगातार सम्पूर्ण विश्व में इस पर इतना कुछ लिखा गया कि 1973 ई. में इसे मशहूर पत्रिका 'एन्साइक्लोपीडिया ब्रिटानिका' तक में जगह मिल गयी। इस त्रिकोण की सबसे विख्यात

दुर्घटना 5 सितंबर, 1945 को हुई, जिसमें पाँच तारपीडो यान इस त्रिकोण में समा गये थे। उड़ानों का नेतृत्व कर रहे चालकों के अनुसार विमानों का दुर्घटनाग्रस्त होने का मुख्य कारण इस त्रिकोण के क्षेत्र में प्रवेश करना था। उन्होंने अपने आखिरी संदेश में कहा था- "हम नहीं जानते कि पश्चिम किस दिशा में है। सब कुछ गलत हो गया है। हमें कोई भी दिशा समझ में नहीं आ रही है। हमें अपने अड्डे से 225 मील उत्तर-पूर्व में होना चाहिए, लेकिन ऐसा लगता है कि..... उसके बाद उनकी आवाज आनी बंद हो गयी और उनका संपर्क पूरी तरह से टूट गया। इसके उपरान्त बरमुडा त्रिकोण के रहस्यमयी होने का संदेह और भी गहरा हो गया, जब उन यानों का पता लगाने गए मैरिनर फ्लाइंग बोट भी 13 व्यक्तियों सहित लापता हो गयी। इस तरह की तमाम घटनाएं उस क्षेत्र में होने का दावा समय-समय पर किया जाता रहा है, परन्तु इन सब के पीछे ठोस व वास्तविक कारण बताने में प्रायः सभी असमर्थ रहे हैं।

यद्यपि, समय-समय पर अनेक प्रकार के दावे इस त्रिकोण के रहस्य को सुलझाने के लिए किए जाते रहे हैं। इस संबंध में चार्ल्स बर्लिट्ज ने 1974 में अपनी पुस्तक के माध्यम से इस रहस्य को खोज लेने का दावा किया था और अपनी पुस्तक 'द बरमुडा ट्राएंगिल मिस्ट्री सॉल्वड' में लिखा था कि यह घटना जैसी रहस्यमयी और अनोखी बतायी जाती है वैसी है नहीं। उनके अनुसार बाँवरो (यान) के चालक अनुभवी नहीं थे और सम्भवतः उनके दिशासूचक यंत्र में खराबी होने के कारण खराब मौसम में एक-दूसरे से टकराकर नष्ट हो गये। वहीं दूसरी ओर कुछ वैज्ञानिकों का यह भी मत

है कि उस क्षेत्र में 'मीथेन हाइड्राइट' नामक रसायन इन दुर्घटनाओं का कारण है। समुद्र में बननेवाला यह हाइड्राइट जब अचानक से फटता है, तो अपने आसपास के सभी जहाजों को अपनी चपेट में लेकर बड़े-से-बड़े जहाज को भी डुबो सकता है। डुबा हुआ जहाज जब समुद्र की अतल गहराई में समा जाता है, तो वहाँ बनने वाले हाइड्राइट की तलछट के नीचे दबकर गायब हो जाता है। इस तरह से गायब हुए जहाजों का बाद में कोई नामों-निशान नहीं मिलता। अमेरिकी भौगोलिक सर्वेक्षण के अनुसार, बरमुडा की समुद्री तलहटी में मीथेन का अकूत भण्डार भरा हुआ है। यही कारण है कि वहाँ जब-तब इस तरह की दुर्घटनाएं होती रहती हैं। कुछ लोगों का तो ये भी तर्क है कि पृथ्वी का गुरुत्वाकर्षण और यहाँ का चुंबकीय क्षेत्र इस जगह पर अत्यधिक चुंबकीय क्षेत्र पैदा करता है, जिसमें जहाज आदि खींचे चले आते हैं या उनका रडार सिस्टम काम करना बंद कर देता है, इससे जहाज रास्ता भटक जाते हैं और वे दुर्घटनाग्रस्त हो जाते हैं।

वास्तव में यदि वैज्ञानिक दृष्टिकोण से इन सारे तर्कों पर गौर किया जाए तो ये स्वयं में विरोधाभासी दिखाई पड़ते हैं और उनमें कहीं न कहीं संदेह व प्रश्न बाकी रह जाते हैं और यह बात तो सर्वविदित है कि विज्ञान सबूतों व प्रमाणिकता का पता लगाए बिना उसे सच नहीं मानता। सारे शोध, और इस तरह की जाँच-पड़ताल के बाद भी आज तक यह नहीं पता चल सका कि इस रहस्यमयी त्रिकोण के ऊपर से गुजरने वाले सारे जहाजों को आसमान खा गया या समुद्री पानी। यदि इन्हें केवल दुर्घटना माना जाए, तो इनका मलबा तो मिलना चाहिए, परन्तु दशकों से इस सवाल को लेकर केवल प्रश्न चिह्न ही है। यही कारण है कि बरमुडा त्रिकोण अभी भी एक अनसुलझा रहस्य बना हुआ है और इस रहस्य से कभी पूरी तरह से पर्दा हटेगा, यह कहना अभी मुश्किल है। लेकिन फिर भी जिस दिन इस घटना का ठोस साक्ष्यों एवं तर्कों के साथ रहस्योद्घेदन होगा, जिस पर संपूर्ण विश्व भी सहमत हो, उस दिन आधुनिक विज्ञान की उपलब्धियों में एक अध्याय और जुड़ जाएगा।

- पृथ्वी अपने अक्ष पर घूमती है, यह सर्वप्रथम भारतीय खगोलज्ञ **आर्यभट्ट** ने बताया था।
- सूर्य का गुरुत्वाकर्षण बल पृथ्वी से **27 गुणा** ज्यादा है।
- बृहस्पति अपने **बड़े लाल धब्बे** के लिए प्रसिद्ध है।

जीवन

वीणा गुणवंत माटे
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक
इसरो मु.



बीत रही जिंदगानी, पल-पल,
यूं ही कश्म-कश में कि,
खो तो वो चुके है हम, जो हमारा था ही नहीं,
और हमने क्या पाया, औरों को देना क्या बाकी है।
जिंदगी के थपेड़ों ने, क्षण-क्षण,
यूं ही अहसास कराए कि,
जीवन क्षण-भंगुर है और उम्मीदों पर सांसें टिकी हैं,
और जो थे अहसास हमारे, औरों को कराना बाकी है।
समय का पहिया घूम रहा, घर-घर,
न थमता, न रुकता है,
लोग दौड़ रहें, एक – दूसरे के साथ की होड़ में,
और तलाश रहे उस सुकून को, जो पाना बाकी है।
जीवन संग्राम चल रहा, रण-रण,
कभी क्रूर, तो कभी कठोर है,
थोड़ा कम, थोड़ा ज्यादा पाने की चाहत में,
लुट तो चुके हैं हम, औरों को लुटना बाकी है।

हमें अपने घर जाना है



श्री तपन कुमार पांडेय
उच्च श्रेणी लिपिक, अं.वि.

कोरोना वायरस को फैलने से रोकने के लिए सरकार ने लॉकडाउन की घोषणा की। शुरुआती दिनों तक तो सब सामान्य गति से चलता रहा, लेकिन अचानक न्यूज चैनलों पर दिल्ली, मुंबई, अहमदाबाद, जयपुर, आदि बड़े शहरों के रेलवे स्टेशनों, बस स्टेशनों पर प्रवासियों की भीड़ वाली तस्वीरें तैरने लगीं। ये प्रवासी अपने-अपने घरों की ओर जाने के लिए यहाँ उमड़ पड़े। हर कोई बस अपने गाँव, अपने शहर पहुँच जाना चाहता था। जिन लोगों को कोई उम्मीद नहीं दिखी, उन्होंने पैदल ही सड़कों पर चलना शुरू कर दिया, ताकि वे अपने घर पहुँच सकें। कई हजार किलोमीटर की दूरी तय करने लगे दो कदम, कई की साँसें रुकीं, कई के पैर लड़खड़ाए लेकिन कोई रुका नहीं और आज भी लोग चल रहे हैं - कोई पैदल तो कोई सरकार द्वारा चलाई गई बसों और ट्रेनों से।

जब मीडिया के लोगों ने पूछा कि सरकार ने लॉकडाउन की घोषणा की है आप ऐसे सड़कों पर मत निकलिए। तो प्रवासी मजदूरों ने बड़ी बेबसी से कहा कि **“सर, यहाँ काम नहीं है, पैसा नहीं है, खाने को नहीं है तो यहाँ रहकर क्या करेंगे, साहब। अब भूख बर्दाश्त नहीं होती। हमें अपने घर जाना है।”**

कोई भी परदेशी नहीं होना चाहता, लेकिन उसकी पेट पालने की मजबूरी, घर चलाने की जरूरत उसे अपने स्वजन, घर-परिवार, गांव, शहर छोड़ने पर मजबूर करती है।

भारत एक विकासशील देश है, जहाँ की बहुसंख्यक जनसंख्या गरीबी रेखा के नीचे, गरीबी रेखा पर या गरीबी रेखा से थोड़ा सा ही ऊपर है।

एक आंकड़े के मुताबिक, भारत में कृषि पर निर्भरता 50 प्रतिशत से भी ऊपर है और जलवायु परिवर्तन, बढ़ती जनसंख्या, छोटी होती जोतें, आदि कारणों के चलते केवल कृषि से एक परिवार चला पाना बहुत मुश्किल है।

भारत के कुछ राज्य औद्योगिक अवसंरचना के अभाव के कारण लोगों को स्थानीय स्तर पर रोजगार नहीं उपलब्ध करा पाते, जिससे कृषि पर निर्भर जनसंख्या उन राज्यों में जाने को मजबूर होती है,

जहाँ औद्योगिक रोजगार आसानी से उपलब्ध होता है।

प्रवासी मजदूर बड़े शहरों में पैसा कमाने के लिए अपने घर से दूर निकल तो पड़ते हैं, लेकिन वहां पर भी उनकी आय जीविकोपार्जन के लिए ही होती है, जहाँ वे अपना पेट भर सकते हैं, उससे ज्यादा कुछ नहीं, लेकिन यह स्थिति तो उससे बेहतर ही है, जब गांवों में सूखा पड़ने पर कई दिनों तक अन्न नहीं मिलता।

प्रवासन की समस्या को कैसे दूर किया जा सकता है-

- कृषि को लाभकारी व्यवसाय बनाया जाए, ताकि किसान को अपनी खेती से ही अतिरिक्त आय प्राप्त हो सके।
- कुछ कृषि सहायक प्रक्रियाएं, जैसे – मत्स्य पालन, डेयरी फार्म, मुर्गी फार्म आदि को प्रोत्साहित किया जाए।
- मृदा की जाँच कराकर मृदा अनुरूप फसल उत्पादन किया जाए।
- जैविक कृषि को बढ़ावा दिया जाए, ताकि मृदा की उर्वरता बनी रहे।
- जीरो बजट फार्मिंग को बढ़ावा दिया जाए।
- कृषि उपज को सरकार स्वयं खरीदे, हालांकि कृषि विपणन समितियाँ कार्यरत हैं, लेकिन उनकी स्थिति भी दयनीय है।
- औद्योगिक विकास को बढ़ावा दिया जाए
- सरकार अपनी नीतियों को कुछ इस प्रकार तैयार करे कि उद्योगों का संकेंद्रण कुछ ही राज्यों में न हो बल्कि हर राज्य में उद्योग का विकास हो।
- राज्य सरकारों को भी चाहिए कि जिला स्तर पर संभव हो, तो जिला स्तर पर या मंडल स्तर पर उद्योगों की स्थापना की जाए तथा उसमें स्थानीय लोगों को रोजगार दिया जाए।
- सरकार न्यूनतम आय योजना पर भी कुछ कदम बढ़ा सकती है। जैसे - जिन किसानों को अपनी कृषि से पर्याप्त लाभ हो रहा है या जो व्यक्ति स्थानीय उद्योगों में रोजगार में लगे हुए हैं, उनको छोड़कर बचे लोगों को न्यूनतम आय प्रदान की जा सकती है, लेकिन यह भी शर्तरहित न हो, उनसे किसी प्रकार का उत्पादक काम लिया जाए।

- व्यवसाय करने के लिए ऋण आसानी से उपलब्ध कराया जाए। प्रक्रियागत जटिलताओं को कम किया जाए।
- वस्तुओं की जमाखोरी पर सरकार नियंत्रण रखे, क्योंकि जमाखोरी से बाजार में मांग बढ़ती है, फलस्वरूप महंगाई बढ़ती है। सरकार चाहे तो हर वस्तु के लिए एक मूल्य सूची बना सकती है, जिसमें परिस्थितिजन्य परिवर्तन किया जा सके।
- सरकार को उन देशों की उन्नत तकनीकों को अपनाना चाहिए, जिन्होंने कृषि के साथ-साथ औद्योगिक विकास को अपनाया है।
- सरकार को व्यावसायिक प्रशिक्षण पर जोर देना चाहिए और उद्योगों की जरूरत के हिसाब से रोजगार कौशल विकसित करने पर ध्यान देना चाहिए।

अब समय आ गया है कि सरकार जनसंख्या नियंत्रण करने पर जोर दे क्योंकि संसाधन के अभाव और बचे हुए संसाधनों पर बढ़ता दबाव इस समस्या के साथ-साथ तमाम समस्याओं को जन्म देगा।

ऐसा नहीं है कि लोगों को प्रवासन से रोकने की सारी जिम्मेदारी सरकार की ही है, लोग भी स्वयं से प्रयास करके इस समस्या को दूर कर सकते हैं। जैसे:-

- लोग नई-नई वैज्ञानिक जानकारियों से स्वयं को जागरूक रखें तथा तकनीकों को सीखने पर जोर दें।
- स्टार्ट-अप्स शुरू करके स्वयं भी रोजगार प्राप्त करें और दूसरों को भी रोजगार दें।

- मार्च 2019 में डी.आर.डी.ओ. ने इसरो की सहायता से 'मिशन शक्ति' नामक उपग्रह रोधी हथियार मिसाइल का सफलतापूर्वक परीक्षण किया था।
- सौरमंडल में धूमकेतु सूर्य की परिक्रमा करते हैं।
- राजभाषा आयोग का गठन पहली बार बाल गंगाधर खेर की अध्यक्षता में हुआ था।

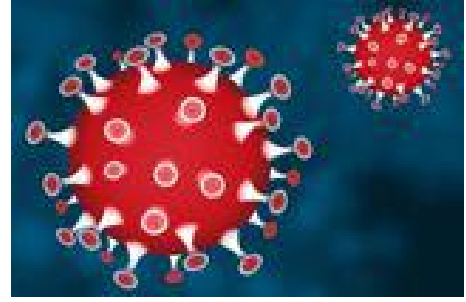
कोरोना



श्री जीवन कुमार सिन्हा
हिंदी टंकक, इसरो मु.

कोरोना... ओ कोरोना...

मुझे इतना सा भी फर्क नहीं पड़ता तेरा होना
तू दुश्मन है, हम सबका दुश्मन है
मुश्किल नहीं है तुझे हराना
बच के रहना ओ कोरोना...



छुप-छुप के वार करता है
हम भी तुझसे छुप जाएंगे
घरों में रहकर देश की ढाल बन जाएंगे
सोशल डिस्टेंसिंग को नहीं है खोना
बच के रहना ओ कोरोना...

कोरोना- बहुत ही स्वाभिमानी
और आत्मसम्मान से भरा हुआ
वायरस है। वो तब तक आपके घर
नहीं आएगा, जब तक आप उसे
लेने खुद बाहर नहीं निकलते।

घर पर रहें, सुरक्षित रहें।

आपदा तू विश्वव्यापी है
तेरे लिए तो भारत ही काफी है
अपनी जान को यूँ आसानी से नहीं है खोना
तुझे यहीं है विलीन होना
बच के रहना ओ कोरोना...



कर्ण की व्यथा – एक वार्तालाप

श्री विनोद कुमार के.
सहायक, अं.वि.



मुख में धारित दुःख का रस, होते मौन, बैठा कर्ण ।
कान में कुंडल, छाती में कवच अपने, सूर्य की भांति, चमकता था स्वर्ण ॥
जब एकांत में डूबा रहा अपने शिविर में, हँसमुख, हुआ कृष्ण का प्रवेश ।
देख अचानक कृष्ण को, झट से बदला अपना मानसिक वेश ॥
प्रसन्नता से तुरंत, करों को जोड़, किया कर्ण ने कृष्ण को प्रणाम ।
मित्रता के भाव से किया कर्ण को स्पर्श, वह देवकीनंदन, राधे-श्याम ॥
देख कर्ण के नयन को, समझे कृष्ण, उनकी मन की स्थिति ।
विचार कर्ण का यह था कि समझाएँ कैसे, अपनी चित की गति?

शिविर में गूँज उठा मौन का आलाप ।

अब प्रारंभ होता है, कृष्ण-कर्ण में वार्तालाप ॥

कृष्ण – “हे राधेय ! सुना रहा है क्यूँ तू मौन की भाषा, जब सारे जग में है तुमसे अभिलाषा?”

कर्ण – “राधेय हूँ (बीभत्स होते), अश्रु बहाते आयी एक वृद्ध स्त्री अपने पुत्रों की रक्षा हेतु भिक्षा मांगने, मुझसे”।

रहस्य का ज्ञात हुआ मुझे, राधेय नहीं परंतु कौन्तेय हूँ, यह कैसे छुपाऊं तुमसे ?”

“अवैध रूप से जन्म लेना, क्या मेरा दोष है” ?

“शिक्षा न दी गुरु द्रोणाचार्य ने, दृष्टि में उनके, क्षत्रिय न होना, क्या मेरा दोष है ?”

“शिक्षा की दीक्षा दी परशुराम ने, परंतु ब्राह्मण न होना क्या मेरा पाप है ?”

“फलस्वरूप, रणभूमि में सारी विद्या भूल जाऊं, यही मुझे उनका दिया हुआ श्राप है” ।

“संयोगवश मेरा बाण पहुंचा एक गाय को मरण,

अब भी है मुझे गाय के स्वामी का दिए हुए श्राप का है स्मरण” ॥

“ठेस पहुंचाकर मेरी प्रतिभा को, किया गया था अपमान मेरा, द्रौपदी के स्वयंवर में” ।

“रक्षा की थी उस क्षण मेरी, दुर्योधन के ऊंचे स्वर ने” ॥

“जो भी प्राप्त मेरे जीवन में, दुर्योधन की मित्रता की दया से है;

दोषी कैसे बना उनका पक्ष लेते हुए ?”

“मित्र की रक्षा एवं मित्रता का उत्तरदायित्व निभाना मेरा कर्म मात्र नहीं,

वही मेरा धर्म भी है” ।

“न मैं पापी और न मैं दोषी हूँ, हे केशव !!”

“परिस्थितियों से पीड़ित, एक अभागा, निर्दोष हूँ” ।

निर्मलता से सुनता रहा कृष्ण, कर्ण की पीड़ा भरी कथा को ।

सुलझाना चाहा कृष्ण ने, कर्ण की व्यथा को ॥

कृष्ण – “हे कर्ण !! कर रहा था मरण, मेरे जन्म से ही पूर्व प्रतीक्षा” ।

“किन्तु कर रहे थे माता-पिता मेरे जन्म की प्रेक्षा” ॥

“जन्म लिया था मैंने कारागार में, रात के अंधकार में” ।

“उसी क्षण, मेरे जन्म के पश्चात, मुझे वियुक्त करने हेतु स्वयं विवश हो गए मेरे माता-पिता ” ॥

“बाल्यावस्था से, तू बड़ा, तलवार, रथ, घोड़े, धनुष एवं बाण की वाणी सुनते हुए” ।

“परंतु, मैं बड़ा, ग्वाले की कुटीर में, गाय के गोबर के बीच में, एवं मेरे चलने से पूर्व ही,

मेरे प्राण पे, सैकड़ों दावे को गिनते हुए” ॥

“न कोई सेना, न कोई शिक्षा थी, दिया गया था, लोक के समस्या हेतु मुझे ही दोष” ।

“परंतु, न मैंने किसी को ठेस पहुंचाया, न किसी को पहुंचा शोष” ॥

“जब आपके गुरुओं ने की अपने साहस हेतु प्रशंसा, षोडश वर्ष का बालक था, जब ऋषि संदीपनि का गुरुकुल में किया प्रवेश, शिक्षा न थी इस से पूर्व, यही थी मेरी दशा” ।

“जीवन है इतना क्रूर, कि प्रेमिका हो गई मुझसे दूर” ।

“तू है विवाहित, अपने इच्छुक कन्या से” ।

“किंतु, हूँ मैं विवाहित, यदि जो मुझसे किया था प्रेम, या राक्षसों से मुझसे की गई रक्षा, उन कन्याओं से” ॥

“जरासंध से बचाने हेतु, मेरे सारे कुल को यमुना नदी का किनारा से लेकर, एक दूरी सागर का तट

तक छोड़ा” ।

“परंतु, कहलाया मैं, एक कायर और भगोड़ा” ॥

“यदि हो जाए दुर्योधन को इस युद्ध में विजय की प्राप्ति,
केवल तू ही बनेगा सारे श्रेय का हकदार” ।

“यदि धर्मराज इस युद्ध में पाएं विजय,
मुझे मिलेगा क्या? केवल यह आरोप कि,
मैं ही हूँ इस युद्ध का एवं संबंधित समस्याओं का सूत्रधार” ॥

“हे कर्ण !! एक विषय को रखो स्मरण” ।
“जीवन देता है सभी को चुनौती, किन्तु अपने आप को न समझो एक पनौती” ॥

“मित्र, यह जीवन नहीं है आसान, किसी पर न करना एहसान” ।
“चाहे वह भगवान हो या इंसान” ॥

“दुर्योधन एवं धर्मराज के जीवन में भरा है, अधिक मात्रा से अधर्म” ।
“किन्तु तुम्हारे अंतःकरण को ही ज्ञात है, कि क्या है धर्म” ॥

“न जाने कितने बार अन्याय, अपमान एवं वचन सहन किए हैं, वह अनावश्यक है” ।
“इन प्रसंगों के प्रति, कैसी थी हमारी प्रतिक्रिया, यही आवश्यक है” ॥

“रूठना बंद करो अंगराज* !! जीवन में अन्याय जो हुआ है सो हुआ है,
परंतु, अधर्मियों का पक्ष लेने का, तुम्हे नहीं है अधिकार” ।

“सदा स्मरण रहे, जीवन एक क्षण में होता है कठिन,
परंतु नियति की सृष्टि, हमारे पहने हुए पदत्रान से नहीं,
किंतु हमसे लिए गए कदम से होती है...

यही है सत्य एवं इसी को करना है स्वीकार” ॥

कवि का संदेश

उपरोक्त कविता की रचना भारतीय महाकाव्य “महाभारत” में उल्लेखित घटना के आधार पर की गई है। महाभारत में श्री कृष्ण और कर्ण, दोनों महत्वपूर्ण पात्र हैं एवं उनके चरित्र का चित्रण एक समान है। ऐसा मान सकते हैं कि जीवन रूपी महासागर में दोनों एक ही नाव में सैर कर रहे हैं। लेकिन, इन दोनों के सोच और विचार में काफी अंतर है।

यह कविता उन लोगों को समर्पित है जो मानसिक दबाव या अवसाद के अधीन हैं। ऐसी परिस्थितियों में व्यक्ति सही और गलत के बीच में भ्रम में पड़ जाता है, उनका जीवन अस्थिर हो जाता है, मानसिक तौर पा और आगे बढ़ने में कमज़ोर पड़ जाता है। इसीलिए यह सलाह दी जाती है कि अगर अपने मन में ऐसी बात हो जो आपको सदा निराश करती है, परिवार या मित्रों का सहारा लें ताकि उसे सुलझाने के लिए सहायता मिल जाए और तो और, ऐसी परिस्थितियों में आत्मविश्लेषण करना अतिआवश्यक है।

उपरोक्त रचना कवि की सोच है जो पौराणिक कथा के द्वारा पाठकों को यह सन्देश पहुंचाने का प्रयास है कि कितनी भी कठिनाईयों का सामना क्यों न करना पड़े, अन्याय या अधर्म का रास्ता न चुनें। कवि को पाठकों से सविनय विनती है कि इस रचना को धार्मिक आकार न दें। केवल कविता में दर्शाया गया विचार को ग्रहण करें।

- संसदीय राजभाषा समिति के अध्यक्ष केंद्रीय गृहमंत्री होते हैं।
- हिंदी सलाहकार समिति सभी मंत्रालयों में गठित की जाती है।
- नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक वर्ष में दो बार आयोजित की जाती है।

गाँठें : कुछ उलझी, कुछ सुलझी

वीणा गुणवंत माटे
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक
इसरो मु.



प्रायः मानव के इर्द-गिर्द गाँठों का वलय है। गाँठें, एक ऐसा प्रकार है जो किसी वस्तु को बांध कर रखती हैं। गाँठों के साकार एवं निराकार रूप देखने को मिलते हैं। रस्सी, कपड़े, धागे, गिफ्ट पैक, रिबन आदि में विशेष प्रकार से फेरा देकर बनाये हुए बंधन साकार गाँठें हैं। कुछ स्कार्फ की गाँठें इस प्रकार से बांधी जाती हैं कि, खिंची और निकल गई। टाई में गाँठ बांधना, जूतों के फीतों में गाँठ बांधना भी एक कौशलपूर्ण कार्य है। इसी प्रकार कई रोग ऐसे हैं जिनमें शरीर के ऊपर अथवा भीतरी भागों में गाँठें पड़ जाती हैं।



गाँठों पर कई मुहावरें भी प्रायः देखने को मिलते हैं:- गाँठ में बांधना, गाँठ खोलना आदि। गाँठों के भी कई प्रकार हैं जैसे विवाह बंधन की गाँठ, रेशम की गाँठ, मन की गाँठ, स्नेह-प्रेम-वात्सल्य की गाँठ, रिश्ते-नातों के संबंधों की गाँठ, विवाह-बंधन तथा राखी के बंधन की गाँठ इत्यादि।

मनुष्य जीवन में रिश्ते-नाते-संबंध को रेशमी बंधन की संज्ञा दी जा सकती है। रेशम कितना भी नाजुक और मुलायम हो तो भी उस पर बाँधी गई गाँठ बहुत ही पक्की होती है, उस पर बांधी गई गाँठ को कितना भी निकालने का प्रयत्न किया जाए, वह निकल नहीं पाती, अक्सर उसे तोड़ना ही पड़ता है, यदि अथक प्रयास से वह सुलझ भी गई तो उस रेशम पर निशान रह ही जाते हैं, उन निशानों को निकालने के लिए उस रेशम को उबलते पानी में छलनी पर रखा जाता है। इतनी यातना सहन करने के बाद रेशम पर से निशान कुछ सीमा तक निकल जाते हैं परंतु रेशम की चमक फीकी पड़ जाती है और उसका रोंया भी कम हो जाता है।

मानवीय रिश्ते-नातों में भी लगभग ऐसा ही होता है, जबरदस्ती से रिश्तों में पड़ी मन-मुटाव

की गांठों को छुड़ाने के निशान रह ही जाते हैं और रिश्ते पूर्व की भांति भावपूर्ण नहीं हो पाते। ऊपर-ऊपर से देखने पर संबंध ठीक-ठाक लगने के बावजूद भी वे भीतर से उलझे हुए और भावनाहीन होते हैं। एक और विशेष प्रकार की गांठ होती है जोकि, हम किसी के विरुद्ध अपने मन-मस्तिष्क में बांध लेते हैं। देखिए, गांठ शब्द वही है, लेकिन भावना एकदम अलग है। रेशम की गांठ में जो भावना है, आत्मीयता है, अपनापन है, समर्पण है, उसका नामो-निशान इसमें नहीं है। इस प्रकार एक-दूसरे के प्रति उत्पन्न मन-मुटाव वाली गांठों को कई लोग अपने मन में वर्षों तक संजोए रहते हैं। यह एक नकारात्मक गांठ है। कभी-कभी इन गांठों का निर्माण गलतफहमी से होता है, तो कभी-कभी क्षण-भर के क्रोध से। कई बार अपमान का घूँट पी भर लेने से इस गांठ का आकार बढ़ता चला जाता है, जिसमें तिरस्कार की दुर्गंध आती है।

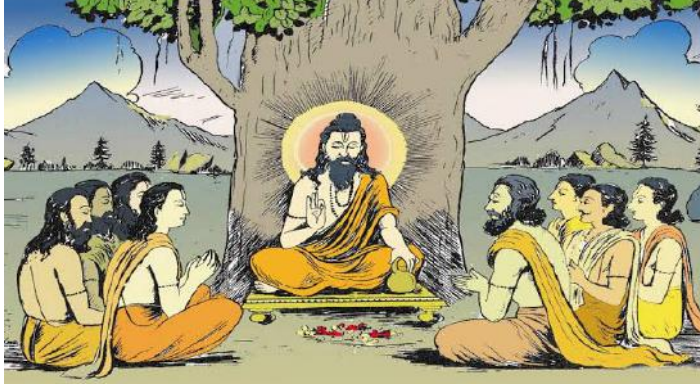
रिश्तों के बंधन की गांठों को तोड़ना या फिर काटना नहीं चाहिए, हाँ उन उलझी हुई गांठों को सुलझाने का प्रयत्न अवश्य करना चाहिए। एक बार किसी को अपना साथ देने का निश्चय कर लेने पर किसी के साथ रिश्ते रूपी बंधन में बंध जाने पर या भविष्य में उनके साथ मन-मुटाव होने पर अथवा किसी कारणवश मन में उनके विरुद्ध दुर्भावना अथवा खटास उत्पन्न होने पर भी उनके साथ के स्नेह बंधन को तोड़ना नहीं चाहिए। एक-दूसरे के प्रति उत्पन्न हुई खटास को सहेजते हुए रिश्तों में दूरियाँ नहीं आनी देनी चाहिए। यह सही है या गलत, पता नहीं, लेकिन रिश्तों में बंधी स्नेह रूपी गांठों को तोड़ना नहीं चाहिए। रिश्तों को तोड़ने से अच्छा है, उन्हें निभाना, सहेजना और संभालना।



जिस प्रकार रिश्तों की गांठों को न टूटने देना एक स्वभाव विशेष है, उसी के उलट मन-मुटावों से निर्मित गांठों को बेवजह सहेज कर रखना एक उन्माद है। इस प्रकार के व्यक्ति अपने मन में निर्मित इन गांठों के ऊपर नकारात्मक सोच की और अधिक गांठें बांधते ही रहते हैं। एक विशेष प्रकार का टेबल-स्प्रेड होता है, जो गाँठों से बना होता है। उसे बिछाते समय उसकी सभी गाँठों को सुलझाना पड़ता है और फिर सभी गाँठें सुलझ कर फूलों के समान खिल उठती हैं। इसी प्रकार यदि मन के भीतर की मन-मुटाव की गाँठें भी सुलझकर फूलों के समान खिल उठें तो.....

ईमानदारी की विवशता

श्रीमती सरिता देवी
माता- श्री निशांत कुमार शर्मा
हिंदी टंकक, अं.वि.



हमारे बड़े प्रायः हमें यह शिक्षा देते हैं कि हमें सदा ईमानदार होना रहना चाहिए, सत्य का आचरण करना चाहिए, अपने कर्तव्य का पालन करना चाहिए तथा कमजोर व गरीबों की सहायता करनी चाहिए। वस्तुतः, ये कुछ नैतिक मान्यताएँ हैं जिन्हें हम अपने जीवन के लिए महत्वपूर्ण मानते आए हैं तथा जिनके अधिकाधिक प्रचलन के लिए हम प्रयत्नशील रहे हैं। हमारे द्वारा ऐसा किया जाने का कारण वस्तुतः यही रहा है कि हम इन नैतिक मान्यताओं को अपने जीवन को सुखमय बनाने का साधन मानते हैं और यह मानते हैं कि इनके बिना मानव जीवन विकृत व कष्टमय हो जाता है। परन्तु, इसके विपरीत संसार में जब हम देखते हैं कि असत्य, धोखाधड़ी तथा बेईमानी का जीवन जीनेवाले दुःखी नहीं, अपितु सुखी हैं, तो इस बात पर प्रश्नचिह्न लग जाता है कि सत्य, कर्तव्यपालन तथा ईमानदारी आदि नैतिक मान्यताओं को हमें अपने-अपने जीवनयापन का आधार बनाना चाहिए या नहीं; क्योंकि अनुभव की बात यह है कि संसार में प्रत्येक व्यक्ति दिखावे के लिए तो सत्य, सच्चरित्रता व ईमानदारी को अच्छा बताता है और यह कहता है कि ये हमारे जीवन के आधार होने चाहिए, परन्तु वास्तविक व्यवहार में असंख्य लोग इन आदर्शों की तिलांजलि देते दिखाई पड़ते हैं, जब वे देखते हैं कि इन पर चलने से जीवन की वास्तविक समस्याएँ आसानी से हल नहीं होतीं तथा इनकी परवाह न करने वाले लोग दुनिया में अधिक सुखमय जीवन बिताते हैं।

सच्चाई व ईमानदारी को अधिकांश लोग क्यों नहीं अपनाते, इस प्रसंग में बेईमानी व ईमानदारी से संबंधित एक कहानी बड़ी प्रासंगिक है। कहा जाता है कि एक बार ईमानदारी व बेईमानी किसी नदी में स्नान करने गईं। स्नान के लिए अपने-अपने कपड़े उतार कर उन दोनों ने देर तक डुबकी लगाए रहने की होड़ के साथ नदी में डुबकी लगाई। बेईमानी अपनी प्रवृत्ति के कारण जल्दी पानी से बाहर निकल आई और ईमानदारी के कपड़े स्वयं पहनकर वहाँ से चली गई। ईमानदारी जब बाद में पानी से बाहर आई और नदी के किनारे अपने कपड़ों को नहीं पाया, तो वह असमंजस में पड़ गई, क्योंकि बेईमानी के कपड़े पहनकर वह स्वयं को बेईमान नहीं बनाना चाहती थी। ऐसी स्थिति में उसने निर्वस्त्र रहना ही अच्छा समझा। कहा जाता है कि तब से ईमानदारी नंगी ही है और उसके कपड़ों को बेईमानी ने पहन रखा है। परिणामस्वरूप, जो लोग बेईमानी रूपी

नंगेपन से बचना चाहते हैं, वे ईमानदारी के दिखावटी वस्त्र पहनने वाली बेईमानी को अपना लेते हैं और जब तक उन्हें बेईमानी की वास्तविकता की पहचान हो पाती है, वे उसी के अभ्यस्त होकर रह जाते हैं, क्योंकि उसके सहारे लोगों की अनेक समस्याएँ सरलता से हल हो जाती हैं। कहानी के अनुसार, यही कारण है कि ईमानदारी दुनिया में अकेली पड़ गई है और उसे अपनाने वाले बहुत कम लोग हैं, जबकि बेईमानी को अपनाने वाले और उसके साथ रहने वाले असंख्य हैं और वे उसे बुरा नहीं वरन् अच्छा समझते हैं।

उपरोक्त बातों से ऐसा लगता है कि मानो ईमानदारी, सच्चरित्र आदि नैतिक मूल्यों को अपनाने वाले लोग कष्टमय जीवन व्यतीत करते हैं, जबकि ये पूर्ण सत्य नहीं है। वास्तव में, हम किसी की बाहरी स्थिति को देखकर उनके जीवनयापन का आंकलन कर बैठते हैं और शायद इसलिए अधिकांशतः लोगों के मन में यह धारणा बन गई है कि ये नैतिक मान्यताएँ केवल दिखावटी आदर्शों व किताबी ज्ञान तक ही सीमित होना चाहिए, जबकि इस विषय में गहराई से देखा जाए ये पता चलता है कि भले ही इन मूल्यों का परित्याग करने से कई कठिन कार्य आसानी से हल हो जाते हों, परन्तु इनके कारण भविष्य में हमारे जीवन पर दुष्प्रभाव पड़ना निश्चित होता है। साथ ही, मन और दिमाग भी अशांत रहता है। जबकि इसके विपरीत नैतिक मूल्यों को जीवन का आधार बनानेवालों को इन सब समस्याओं का सामना नहीं करना पड़ता, और वे पूर्ण आत्मविश्वास व स्वाभिमान के साथ एक आदर्श जीवन जीते हैं। अतः, हमें अपने जीवन में इन नैतिक मूल्यों का त्याग करने से पहले इनके दूरगामी परिणामों पर विचार करना चाहिए, ताकि इनके अभाव में समाज एवं परिवार का नैतिक पतन न हो और हम वास्तविक अर्थों में अर्थात् मानसिक रूप से सुखमय जीवन व्यतीत कर सकें।

- राजभाषा अधिनियम 1963 में कुल 9 धाराएं हैं।
- राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) का संबंध राजभाषा नियम, 1976 के 6 से है।
- देश का पहला राष्ट्रीय हिंदी संग्रहालय आगरा में स्थापित किया जा रहा है।
- भारत के प्रथम राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त हैं।
- नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति का अध्यक्ष नगर का वरिष्ठतम अधिकारी होता है।
- राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन 3 महीने में एक बार होता है।

'मुश्किल बड़ी घड़ी है'

श्रीमती अम्बिका द्विवेदी,
सहायक, अं.वि.



मुश्किल बड़ी घड़ी है, संयम बनाए रखना।
एक फासला बनाकर, खुद को बचाए रखना।।

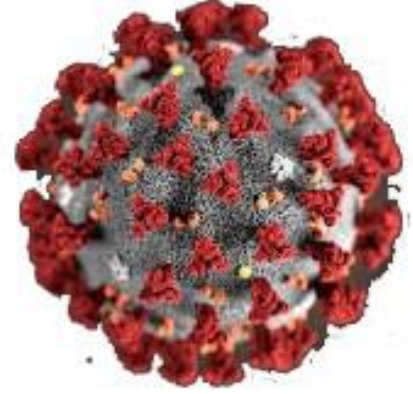
है जिंदगी नियामत, असमय ये खो ना जाये।
इस देश पर कोरोना, हावी ना होने पाये।।

ये वक्त कह रहा है, घर से नहीं निकलना।।
निज शक्ति को बढ़ाना, संकल्प से ही अपने।।

इस रोग को हराना, इस रोग को हराना।
हाथो को अपने साथी, कई बार धोते रहना।।

उनको नमन करें हम, सेवा में जो लगे हैं।
सब कुछ भुला के अपना, दिन-रात जो जुटे हैं।।

रहकर सजग हमेशा, अफवाहों से भी बचना।
मुश्किल बड़ी घड़ी है, संयम बनाए रखना।।



लाख दुःखों की एक दवा है हँसी

श्रीमती पद्मा एन.
व. परियोजना सहायक, इसरो मु.



किसी ने सच ही कहा है कि **“LAUGHTER IS THE BEST MEDICINE”** अर्थात् **“हँसी सबसे बेहतरीन औषधि है”** जो हमें कई बीमारियों से दूर रखती है। हँसकर हम स्वयं तो खुश रहते ही हैं और साथ में आस-पास मौजूद लोगों को भी खुश रख सकते हैं। हँसी तनाव, दर्द और संघर्ष के लिए एक शक्तिशाली प्रतिरक्षी है। हँसी बोज़ को हल्का कर उम्मीदों को प्रेरित करती है और दूसरों से जोड़ती है। हँसी से हम क्रोध को दूर रख सकते हैं। मनुष्य को हँसने से, शारीरिक और मानसिक दोनों की स्थिति ठीक करने के लिए शक्ति मिलती है। बच्चों से लेकर बड़े लोगों तक सभी के स्वास्थ्य के लिए लाभदायक होती है।

वास्तव में हँसते लोगों की आवाज़ सबसे ख़ुबसूरत आवाज़ों में एक है। इंसान हँसते हुए बच्चे को देखकर स्वयं को रोक नहीं पाता है और मुस्कुरा देता है। बचपन में हम दिन में सैकड़ों बार हँसते थे, खुद की गलती पर हँस लेते थे और दूसरों की गलती पर हँसते थे, छोटी सी आशा पूरी हुई तो खुशी से झूम जाते थे, तब हँसी का कोई कारण नहीं होता था। लेकिन जैसे-जैसे बड़े होते गए, जिन्दगी को गंभीरता से लेने लगे तो हँसी मानो पीछे छूटती चली गयी। लेकिन हम भूल गए हैं कि विनोद और हँसी के लिए अधिक-से-अधिक अवसर तलाशने से हम केवल अपने भावनात्मक स्वास्थ्य में सुधार कर सकते हैं बल्कि अपने रिश्तों को मजबूत बना सकते हैं।

हँसी ऐसी चीज़ है जो –

- दर्द से राहत प्रदान करती है
- निराशा और तनाव को कम करती है
- प्रतिरक्षा और प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाती है
- कैलोरी घटाने में सहायक होती है
- संपूर्ण शारीर के कामकाज में मदद करती है
- रचनात्मकता और मानसिक सकारात्मकता में सुधार करती है

- दिल की बीमारी के खतरे को कम करती है
- अच्छी नींद आती है
- शरीर को ऊर्जावान बनाती है
- रक्त प्रवाह को बढ़ाती है और हृदय को तंदुरुस्त रखती है
- लोगों में आक्रामकता को कम करती है।

स्वस्थ नागरिक देश में अपना सकारात्मक योगदान देता है। लोगों की खुशी में ही परिवारजनों की खुशी है। परिवार खुश तो आस-पास का माहौल भी खुश, शायद इसलिए कहा गया है “जो परिवार साथ में हैंसते हैं, उनमें आपस में मजबूत बंधन होता है”।

- 1) अपने प्रति कठोर न हों, खुद के प्रति सद्भाव जरूर रखें।
- 2) जिंदगी में जो मिला है, उसका अहसान मानें, दूसरों को, प्रकृति को और अपनी खूबसूरत जिंदगी को शुक्रिया जरूर अदा करें।
- 3) अपनी उत्सुकता को बनाए रखें।
- 4) अच्छी बातों को जेहन में उतारना और बुरी बातों को जेहन से निकालना हमारे ही हाथों में है।
- 5) मुस्कुराने से खुशी स्वयं ही पैदा होती है।
- 6) बहुत जरूरी है चैन की नींद लेना।

इसलिए मैं कहती हूँ कि खुश रहें, मस्त रहें...

- नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन **6 महीने में एक बार** होता है।
- राजभाषा का वार्षिक कार्यक्रम **राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय** तैयार करता है।
- राजभाषा अधिनियम की धारा **3(3) 26 जनवरी 1965** से प्रवृत्त हुई थी।
- केंद्रीय हिंदी समिति के अध्यक्ष **प्रधानमंत्री** होते हैं।

खग ! उड़ते रहना जीवन भर



श्री रघुनाथ सी. आर.
वरिष्ठ सहायक, इसरो मु.

खग ! उड़ते रहना जीवन भर।

भूल गया है तू अपना पथ,
और नहीं पंखों में भी गति,
किंतु लौटना पीछे पथ पर और मौत से भी है बदतर।

खग ! उड़ते रहना जीवन भर।

मत डर प्रलय झकोरों से तू,
क्षण में यह अरि-दल मिट जाएगा तेरे पंखों से पिस कर।

खग ! उड़ते रहना जीवन भर।

यदि तू लौट पड़ेगा थक कर,
अंधड़ काल बवंडर से डर,
प्यार तुझे करने वाले ही देखेंगे तुझको हँस-हँस कर।

खग ! उड़ते रहना जीवन भर।

और मिट गया यदि तू चलते-चलते,
मंजिल पथ पार करते-करते,
तेरी खाक चढ़ाएगा जग उन्नत भाल और आंखों पर।

खग ! उड़ते रहना जीवन भर।

"ये गृहणियाँ भी थोड़ी पागल सी होती हैं"



श्री पंकज त्रिवेदी
उच्च श्रेणी लिपिक, अं.वि.

सलीके से आकार देकर
रोटियों को गोल बनाती हैं
और अपने शरीर को ही
आकार देना भूल जाती हैं
ये गृहणियाँ भी
थोड़ी पागल सी होती हैं।

ढेरों वक्त लगाकर घर का
हर कोना-कोना चमकाती हैं
उलझी बिखरी जुल्फों को
ज़रा सा वक्त नहीं दे पाती हैं
ये गृहणियाँ भी
थोड़ी पागल सी होती हैं।

किसी के बीमार होते ही,
सारा घर सिर पर उठाती हैं
कर अनदेखा अपने दर्द
सब तकलीफें टाल जाती हैं
ये गृहणियाँ भी
थोड़ी पागल सी होती हैं ॥

खून पसीना एक कर
सबके सपनों को सजाती हैं
अपनी अधूरी ख्वाहिशें सभी
दिल में दफ़न कर जाती हैं
ये गृहणियाँ भी
थोड़ी पागल सी होती हैं।

सबकी बलाएँ लेती हैं
सबकी नज़र उतारती हैं
ज़रा सी ऊँच-नीच हो तो
नज़रों से उतर ये जाती हैं
ये गृहणियाँ भी
थोड़ी पागल सी होती हैं।

एक बंधन में बाँधकर
कई रिश्ते साथ ले चलती हैं
कितनी भी आए मुश्किलें
प्यार से सबको रखती हैं
ये गृहणियाँ भी
थोड़ी पागल सी होती हैं।

मायके से सासरे तक
हर जिम्मेदारी निभाती हैं
कल की भोली गुड़िया रानी
आज समझदार हो जाती हैं
ये गृहणियाँ भी.....
वक्त के साथ ढल जाती हैं।

मुँह पैसों का

श्री विनोद कुमार के.
सहायक, अं.वि.



इंसान के हाथों से मैं पैदा हुआ।,
मुझसे इंसान को बहुत ही फायदा हुआ॥

अब मेरा ही नाम फैला हुआ है इस जग में ।
मेरा ही प्रभाव पड़ा है, हर मनुष्य की रग में ॥

दुनिया के चारों तरफ खड़ा हूँ बनकर मैं दिग्गज ।
मैं किसी का नहीं हूँ अनुज, सबका हूँ मैं अग्रज ॥

एक क्षण में बदल देता हूँ, एक सादे गँवार को, एक सीधा नागर ।
मैंने ही बहा दिया, इस संसार में पाप का महासागर ॥

मैं मनुष्य को हवा में उड़ाउंगा देकर उसको पंख ।
राजा से मैं निकल गया तो, बनेगा वह रंक ॥

मेरी वजह से ही तुम पा सकते हो दुनिया के अनमोल रतन ।
मुझसे ही तुम पाओगे, जीवन में भयंकर पतन ॥

तुम्हारे अज्ञान से, मैंने डाला है तेरे हृदय पर यम-पाश ।
इस संसार का होगा मुझसे ही सर्वनाश ॥

आओ, मेरे चरणों में गिर पड़ो, करूंगा तुम्हारी रक्षा ।
वर्ना, तुम पछताओगे और जीने के लिए मांगोगे भिक्षा ॥

मेरा सदुपयोग करो, बना रहूँगा तुम्हारा नौकर ।
मेरा दुरुपयोग किया तो, बनूँगा तेरा मालिक, देकर तुझे ठोकर ॥

अब मुझसे यह न पूछो कि मैं कौन हूँ और मैं बना कैसा?
मैं तुम्हारा हूँ दोस्त और दुश्मन, नाम है मेरा 'पैसा'॥

मूली का पराठा

श्री मार्तण्ड महेश
रसोइया, इसरो मु.



सर्दियों में आने वाली मूली यूँ तो सलाद में उपयोग होती है लेकिन इसके गरमा-गरम पराठों का तो कहना ही क्या। मक्खन, अचार या चटनी के साथ इन पराठों को गरम-गरम खाया जाए तो पेट भरकर नाश्ता तो हो ही जाता है, साथ-ही-साथ स्वाद चखकर दिल भी खुश हो जाता है। तो क्यों ना आप भी इन पराठों को बनाएं और अपने परिवार को खिलाएं।

सामग्री

मूली	2
बारीक कटी हरी मिर्च	2
बारीक कटा हरा धनिया	1 कटोरी
अदरक (कद्दुकस किया हुआ)	1 चम्मच
चाट मसाला	1 चम्मच
जीरा पाउडर (भुना हुआ)	1 चम्मच
अजवाइन	1 चम्मच
आटा	3 कप
घी या मक्खन	1 कप
नमक	स्वादानुसार

मूली पराठा बनाने की विधि -

1	सबसे पहले एक बरतन में अजवाइन और नमक डालकर आटा गूँथ लें। आटा ज्यादा गीला न रखें।
2	धुली हुई मूली को छील लें और उसे कद्दूकस मूली का पानी निकाल दें।
3	मूली में हरी मिर्च, हरा धनिया, चाट मसाला, जीरा पाउडर और नमक मिला लें। इसे अच्छे से मिला ले ताकि मसाला सभी जगह घुलमिल जाए।
4	आटे की लोई बनाएं और पूड़ी के आकार का बेल लें। इसमें मूली मिक्स डालें और मोड़ते हुए सभी छोरो से बंद कर दें।
5	अब इसे बेलते हुए रोटी का आकार दें और फिर घी या मक्खन की मदद से तवे पर सेंक लें।
6	मूली के पराठों को अचार या अपनी पसंद की चटनी के साथ परोसें ।



गर इज़ाजत हो



श्री गुरुप्रसाद यादव
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक, इसरो मु.

कुछ दीवारें गिरा दूँ गर इज़ाजत हो।
होश बढ़ा दे गर जमीन पर दरारें,
थोड़ी बेहोशी पिला दूँ गर इज़ाजत हो।

इस 'होश' ने राह में मुश्किलें बड़ी की हैं
नफरत की दीवार आंगनों में खड़ी की हैं।
धड़कने बोझिल हो चुकी हैं इस हवा में अगर
दवाओं में भी बिक रहा है जो खुलेआम जहर
नींद रूठने लगी हो जो तुम्हारी पलकों से,
मैं कुछ ख्वाब जगा दूँ, गर इज़ाजत हो।

सरहदें उठकर हवाओं को भी टोकने जो लगे,
दीवारें ऐसी गिरा दूँ गर इज़ाजत हो।

बँट चुके हैं यदि आँसू और ज़खम भी
मर्ज ही दे रहे हैं यदि मरहम भी
हरकतें होशवालों की, गर समझ से परे हों
कलम के सिपाही भी कुछ डरे डरे हों,
द्वंद्व से कंठ सूख रहा हो गर तुम्हारा
सुकून के दो बूँद पिला दूँ गर इज़ाजत हो।

जिंदगी ही कैद जो होने लगे दीवारों में,
दीवारें ऐसी गिरा दूँ गर इज़ाजत हो।

आवाजें बाहर की यदि दिल को बहरा कर दें
नफरतें आँखों पर मजबूत सा पहरा कर दें
चीखें देने लगे सुकून कानों को अगर,
तलवारें बात-बेबात खिंच जाएं घर-घर
सपनें भी हों यूँ कि रात भर जगाने लगे,
भूले हुए कुछ गीत गुनगुना दूँ गर इज़ाजत हो।

इससे पहले कि चुन दिये जाएँ हम भी दीवारों में,
दीवारें ऐसी गिरा दूँ गर इज़ाजत हो।

बाँटकर हमें कितनों के कारोबार हुए
जाने कितने मरे, घर कितनों के बेजार हुए
धर्म मानवता का धर्म सर्वोपरि न रहा
नाम पर धर्मों के मजलूमों का रक्त बहा,
मान लिया है घर परिंदों ने कारागारों को
नीले आसमान दिखा दूँ गर इज़ाजत हो।

दिलों की सरिता पर बांध बनाया है जो,
दीवारें ऐसी गिरा दूँ गर इज़ाजत हो।

खुबसूरत है ये जमीन बिन दीवारों के
अच्छे लगते हैं ये हाथ बिन हथियारों के
बीज बो सकते हैं इन हाथों से अमन के भी
सजा सकते हैं इस धरा को हम चमन से भी,
हासिल कुछ भी नहीं है भेद-भाव की दीवारों से,
ऐसी दीवारें गिरा दूँ गर इज़ाजत हो।

होश बढ़ा दे गर जमीन पर दरारें,
थोड़ी खुमार पिला दूँ गर इज़ाजत हो,
कुछ दीवारें गिरा दूँ गर इज़ाजत हो।

शिल्पपादिकम् : एक परिचय



श्री निशांत कुमार, कार्यक्रम प्रबंधक
क्षमता निर्माण कार्यक्रम कार्यालय,
इसरो मु.

विश्व की सबसे प्राचीन एवं जीवंत भाषाओं में से तमिल एक है। इसका साहित्य महाकाव्यों, खंडकाव्यों, कविताओं, नाटकों एवं अन्य प्रकार की विधाओं से समृद्ध है। प्राचीन तमिल साहित्य के पाँच सबसे महत्वपूर्ण महाकाव्यों में “शिल्पपादिकम्” एक है। अन्य चार प्राचीन महाकाव्य ग्रन्थों के नाम “मणिमेकलई”, “सिवाका चिंतामणि”, “वाल्यापति” एवं “कुंजलाकेजी” है। शिल्पपादिकम् के रचनाकार महाकवि इलंगो अदिगल थे, जो चेरा राज परिवार से आते थे।

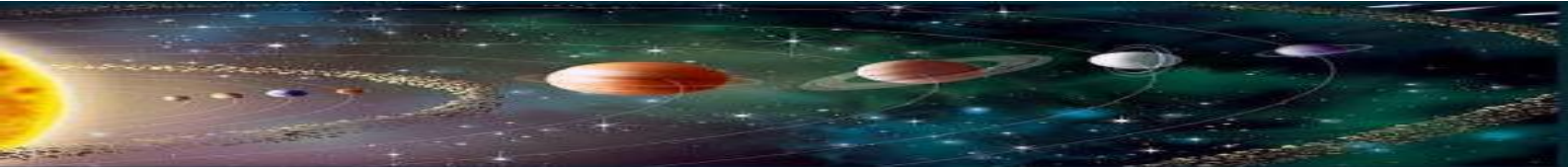
ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

इस महाकाव्य की पृष्ठभूमि संगम साहित्य के उत्तरार्द्ध में लगभग ईसा के प्रारंभिक सदियों में है। कथानक में उस समय के दक्षिण भारत की तीन राजसत्ताओं ‘चोला’, ‘चेरा’ एवं ‘पांड्य’ का उल्लेख है। इस महाकाव्य से उस समय की सामाजिक पृष्ठभूमि, आम लोगों के जनजीवन एवं शहरों एवं गाँवों के जीवन के बारे में भी पता चलता है।

कथानक

इस महाकाव्य के मुख्य पात्र कण्णकी, माधवी एवं कोवलन हैं। ये सभी उस समय के पूहर (आधुनिक नागपट्टिणम जिले का एक शहर), जो उस समय के चोला राजवंश की राजधानी भी थी, से आते हैं। कण्णकी, पूहर के सुप्रसिद्ध समुद्री व्यापारी ‘माणिक्यन’ की पुत्री है। कोवलन पूहर के नगर सेठ के पुत्र हैं। कोवलन का विवाह कण्णकी के साथ बड़े धूमधाम से हो जाता है। लेकिन कोवलन को समय के साथ माधवी नाम की नृत्यबाला से प्रेम हो जाता है। कोवलन कण्णकी एवं अपने परिवार वालों को छोड़कर माधवी के साथ रहने लगते हैं। माधवी के साथ रहते-रहते कोवलन अपना सारा धन एवं व्यवसाय धीरे-धीरे खो बैठते हैं।

एक दिन माधवी कोई गाना गा रही होती है, जिसकी पंक्तियों पर गौर करने के बाद कोवलन को अपनी पत्नी के परित्याग के गलती का अनुभव होता है। वह माधवी को छोड़कर वापस कण्णकी के पास रहने चला जाता है। लेकिन इन दिनों में कण्णकी की भी आर्थिक स्थिति विपन्न हो चुकी होती है।



कण्णनकी और कोवलन नाए सिरे से अपना जीवनयापन प्रारंभ करने के लिए मदुरै की तरफ प्रस्थान करते हैं, जो पांड्य साम्राज्य की राजधानी भी है। कण्णनकी अपने गहने व्यवसाय के लिए पुंजी बनाने हेतु बेचने के लिए कोवलन को देती है। कोवलन गहने लेकर बेचने हेतु मदुरै के बाज़ार में जाता है। इस समय वहाँ के रानी का एक हार राजा के स्वर्णकार द्वारा चुरा लिया जाता है। राजा के सिपाहियों द्वारा इस अपराध के लिए कोवलन को पकड़ लिया जाता है, क्योंकि कोवलन के पास बिलकुल वैसा ही हार होता है। कोवलन को अपना पक्ष रखने का मौका दिए बिना राजा उनका सर कलम करवा देते हैं।

कण्णनकी को जब यह पता चलता है, तो वह राजमहल में आकर राजा के समक्ष अपने पति के निर्दोष होने को प्रमाणित करती है। राजा को अपनी गलती का ऐहसास होता है एवं हृदयाघात से उसकी तुरंत मृत्यु हो जाती है। कण्णनकी गुस्से में अपना हार अग्निरक्षक चक्र पर फेंकती है, जिससे आग उत्पन्न होती है। थोड़ी ही देर में इस आग से सम्पूर्ण राजमहल सहित आधा मदुरै शहर जल जाता है। इस प्रकार, इस कहानी का दुखान्त हो जाता है। यह कहानी, उस समय की कहानी होने के बावजूद सदियों तक अपनी छाप छोड़ती है। प्रेम संबंधों के घात-प्रतिघात एवं जटिलताओं के ताने-बाने से बनी कहानी का पटाक्षेप राज्य एवं नागरिक के संबंध से होता है। राजसत्ता द्वारा न्याय के लिए अपने पक्ष को रखने का मौका दिए बिना निर्णय लेने से राजसत्ता एवं सत्ता-केन्द्र के विनाश की तरफ इंगित करने वाली यह कहानी राजसत्ता को कर्तव्य बोध का भी पाठ पढ़ाती है।

अनुवाद एवं पुनर्लेखन:

हिंदी के विख्यात साहित्यकार अमृतलाल नागर ने 'शिल्पपादिकम' पर आधारित उपन्यास 'सुहाग के नुपूर' लिखा है। अंग्रेज़ी में 'आर. पार्थसारथी' ने इसका अनुवाद 'द टेल ऑफ एन एंकलेंट' नाम के पुस्तक के रूप में किया है। श्याम बेनेगल निर्देशित प्रसिद्ध दूरदर्शन श्रृंखला 'भारत एक खोज' में

'शिल्पपादिकम' की कहानी को भी अभिनीत किया गया है। इस महाकाव्य पर आधारित कई नाटक एवं चलचित्र दक्षिण भारतीय भाषाओं में बन चुके हैं, जिनमें कण्णनकी एवं पूहरे उल्लेखनीय है।

हमारी संस्कृति

श्रीमती जयश्री एन.एस.
क्रय एवं भंडार अधिकारी,
इसरो मु.



पुत्र भीष्म को अपने दिवंगत पिता शांतनु महाराज का श्राद्ध कार्य करना था। श्राद्ध कार्य के दौरान एक अद्भुत घटना घटी। पिंड को अपने वश में करने की चेष्टा से भूमि के अंदर से दो हाथ निकलते दिखाई दिए। ऐसा देख पुत्र भीष्म काफी अचंभित हुए, परंतु तभी उनकी नजर भूमि के अंदर से निकलते हुए उस हाथ की उंगलियों पर पड़ी। उँगली में पहनी हुई उस स्वर्ण अँगूठी को देखकर भीष्म पितामह ने सहज अपने दिवंगत पिता शांतनु महाराज को पहचान लिया, परंतु पिंड को उन्होंने अपने पिता के हाथों में न देकर भूमि पर रख दिया क्योंकि शास्त्र के अनुसार श्राद्ध क्रिया में पिंड को भूमि पर ही रखना आवश्यक होता है। ऐसा करने से शांतनु महाराज नाराज़ नहीं हुए बल्कि वे संतुष्ट हुए कि उनके पुत्र भीष्म संपूर्ण शास्त्र विधि से श्राद्ध क्रिया कर रहे हैं।

अतः प्रसन्न होकर शांतनु महाराज ने भीष्म पितामह से वर मांगने के लिए कहा। भीष्म पितामह ने कृतज्ञ होकर कहा कि वे बहुत संतुष्ट हैं और उनमें अब तनिक भी इच्छा शेष नहीं है। फिर भी शांतनु महाराज ने अपने पुत्र भीष्म को "इच्छामृत्यु" का वर दिया कि जब तक भीष्म न चाहें, तब तक मृत्यु उनके पास न आ सकेगी।

इस कथा से हमें यह शिक्षा मिलती है कि जीवन में माता-पिता की सेवा करना, देवताओं की सेवा करने से अधिक श्रेष्ठ है।

भू-लोक में जो लोग अपने पूर्वजों का श्राद्ध कार्य शास्त्रानुसार करते समय दान कार्य भी करते हैं, दान की हुई वस्तुएं अपरोक्ष रूप से वापस प्राप्त होती हैं।



श्री मार्तण्ड महेश
रसोइया, इसरो मु.

क्या हो गया और क्या होगा
कुछ भी पता नहीं,

परमाणु और अणु के युग में,
कल जियोगे कि पता नहीं,

इतराने वाली दुनिया,
पलक झपकते ठगे गए,

थोड़ी प्रकृति ने हलचल मचायी,
बड़े से बड़े धाराशायी होते गए,

अपने विकासशील होने का दंभ करने वाले,
कहां चली गई तुम्हारी बुद्धि,

जिस प्रकृति से लिया था सब कुछ,
उसी से छले गए,

मान लो, आज से प्रकृति को सम्मान दो,
काल में समा जाओगे, अपना अभिमान छोड़ दो,

विपदा की इस घड़ी में, सब कुछ अपना त्याग दो,
प्रकृति ही सभी को बचायेगी, उनको ऊँचा स्थान दो॥



समय



श्रीमती पद्मा एन.
व. परियोजना सहायक, इसरो मु.

कुछ पल बीत गए, कुछ बीत रहे हैं,
कुछ दोस्त छूट गए, कुछ छूट रहे हैं ;
अजीब है, जिन्दगी की ये दास्तान,
बहुत समय बीत गया, कुछ समय शेष है ;

रात काफी लंबी है, राहगीर बहुत मिलेंगे,
मगर सब वो दोस्त न होंगे,
जिनसे हम मिलना चाहेंगे ;
अगर मिलकर बिछड़ना भी तय ही है,
तो यह जानते हुए भी हम अपना दिल क्यों दुखाएंगे ?

हर तरफ दौड़ है, हर ओर भीड़ है,
कुछ दौड़ में खो गए, कई भीड़ में गुम हो गए ;
जब ख़त्म हुई दौड़ और न दिखी भीड़,
जहाँ से आए थे, वहीं वापस थम गए ;

पता नहीं सब सही है, या मैं ही गलत
मगर जिंदगी की रफ़्तार आती नहीं समझ ;
कुछ ही पल साथ हों और होना हो दूर,
तो किस चीज का जश्न मनाया जाए इधर ?

दौड़ रुकेगी नहीं, सब भागते रहेंगे,
मगर ए पल शायद कल न रहेंगे ;
खुश आज ही हो जाएं तो बेहतर है,
क्या पता, कल कौन, कहाँ और कैसे रहेंगे।

सकारात्मक विचार



श्रीमती अम्बिका द्विवेदी,
सहायक, अं.वि.

कई वर्ष पूर्व एक जूता कंपनी ने अपने दो विक्रेताओं को यह मालूम करने हेतु अफ्रीका भेजा, कि क्या वहां कोई जूतों का बाजार है?

पहले विक्रेता ने बताया कि - 'वहां पर कोई मार्केट नहीं है, क्योंकि वहां कोई जूते ही नहीं पहनता है'।

दूसरे विक्रेता ने बताया कि 'वहां पर बहुत ही बड़ा मार्केट है, क्योंकि वहां कोई जूते नहीं पहनता है'।

यहां पर स्थिति दोनों ही विक्रेताओं के लिए समान है परंतु दोनों का देखने का नजरिया अलग है - एक का सकारात्मक और दूसरे का नकारात्मक। पहले वाले विक्रेता ने



इस स्थिति को एक समस्या के रूप में देखा कि वहां कोई जूते ही नहीं पहनता, जबकि दूसरे विक्रेता ने इसे एक अवसर के रूप में देखा कि चूंकि वहां कोई जूते नहीं पहनता है, हम वहां अपना बाजार लगा सकते हैं।

अतः, हम सभी को यह प्रयास करना चाहिए कि जब भी हमारे सामने ऐसी कोई भी परिस्थिति आए तो हमें सीधे यह नहीं बोल देना है कि 'यह नहीं हो सकता है' बल्कि हमें अपने आप से यह पूछना होगा कि 'मैं इसे कैसे कर सकता हूँ'।

शून्य



श्री गुरुप्रसाद यादव
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक, इसरो मु.

शून्य से शुरू हुआ हूँ
जी रहा हूँ शून्य को
पहुँचकर भी हर शिखर
मैं शून्य हूँ, मैं शून्य हूँ।

सफर ये अनंत है
जो चल रहा है शून्य पर
ये द्वंद्व तो प्रचण्ड है
क्या आदि है क्या अंत है।

उठ रहा हूँ नील से
नील में विलीन हूँ
पूर्णता समेटकर भी
अंततः मैं शून्य हूँ।

नित नई आगाज हूँ
खामोश इक आवाज हूँ
मैं वक्त में बिखर रहा
सिमट रहा हूँ शून्य में।

हूँ अर्थ, अर्थहीन में
और भाव, भाव शून्य में
हूँ शब्द के परे भी मैं
और शब्द में विलीन भी

मैं मृत्यु पर नहीं खतम
शुरू नहीं हूँ जन्म से
मैं आ रहा हूँ शून्य से
मैं जा रहा हूँ शून्य तक

जानते मुझे हो तुम
और जानते भी हो नहीं
सर्वत्र व्याप्त हूँ भी मैं
परंतु दृश्य हूँ नहीं

मैं शून्य हूँ, मैं शून्य हूँ
मैं शून्य हूँ, मैं शून्य हूँ।

भारत की सांस्कृतिक धरोहर

संपादक मंडल की ओर से

भारत के वे मंदिर जिनकी तर्ज पर भारत के संसद भवन का डिजाइन प्रेरित है:-

चौसठ योगिनी मंदिर



(संसद भवन)



(चौसठ योगिनी मंदिर)

भारत में चार चौसठ योगिनी मंदिर हैं, जिनमें से दो ओडिशा और दो मध्य प्रदेश में हैं। मध्य प्रदेश के मुरैना में स्थित चौसठ योगिनी मंदिर सबसे प्रमुख और प्राचीन है। यह मंदिर तंत्र-मंत्र के लिए काफी प्रसिद्ध था। स्थानीय निवासी आज भी यह मानते हैं कि यह मंदिर आज भी शिव की तंत्र साधना के कवच से ढका हुआ है। यह सभी चौसठ योगिनी माता आदिशक्ति काली का अवतार माने जाते हैं। चौसठ योगिनी मंदिर एक जमाने में तांत्रिक यूनिवर्सिटी कहलाता था। कभी इस मंदिर में तांत्रिक सिद्धियां हासिल करने के लिए तांत्रिकों का जमावड़ा लगा रहता था। इस मंदिर को इकतेश्वर महादेव मंदिर के नाम से भी जाना जाता है।

ब्रिटिश आर्किटेक्ट एडविन लुटियंस ने इस मंदिर को आधार मानकर दिल्ली के संसद भवन का निर्माण करवाया था। परंतु, इस संबंध में कोई ऐतिहासिक प्रमाण मौजूद नहीं है। इसकी चर्चा ना तो किताबों में कहीं है और ना ही संसद की वेबसाइट पर है। संसद भवन न केवल बाहर से इस मंदिर से मिलता-जुलता है, बल्कि अंदर भी खंभों का वैसा ही ढाँचा है।

करीब 200 सीढ़ियां चढ़ने के बाद चौसठ योगिनी मंदिर तक पहुँचा जा सकता है। यह मंदिर एक वृत्तीय आधार पर निर्मित है और इसमें 64 कमरे हैं। हर कमरे में एक-एक शिवलिंग बना हुआ है। मंदिर के मध्य में एक खुला हुआ मण्डप है, जिसमें एक विशाल शिवलिंग है। ऐसी मान्यता है कि इस मंदिर का निर्माण सन् 1323 ईसवी में हुआ था तथा इसका निर्माण क्षत्रिय राजाओं ने करवाया था।

'दिशा' के 9वें अंक में प्रकाशित तीन उत्कृष्ट रचनाओं के लिए लेखकों को नकद पुरस्कार प्रदान किए गए:

हार्दिक बधाई

9वां अंक

अरे! क्या सचमुच में भगवान हैं
डॉ. प्रफुल्ल कुमार जैन
इसरो मु.



आधुनिक भारतीय साहित्य में गांधीवाद की प्रासंगिकता,
महात्मा गांधी – एक क्रांतिकारी परिवर्तक
श्रीमती रश्मि ठाकुर
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक
इसरो मु.



मेरे तोते की कहानी
श्री प्रत्युष कुमार
हिंदी टंकक
इसरो मु.



'दिशा' के 10वें अंक में प्रकाशित तीन उत्कृष्ट रचनाओं के लिए लेखकों को नकद पुरस्कार प्रदान किए गए:

हार्दिक बधाई

10वां अंक

हिंदी का संघर्ष

श्री निशांत कुमार शर्मा
हिंदी टंकक
अं.वि.



ध्यान – एक आवश्यकता

श्री करण गुप्ता
वैज्ञा./अभि.-एस.सी.
अं.वि.



एक कदम स्वच्छता की ओर

श्रीमती सरिता देवी
माता- श्री निशांत कुमार शर्मा
हिंदी टंकक
अं.वि.



मई 2019 - अप्रैल 2020 की अवधि के दौरान अंतरिक्ष भवन की महत्वपूर्ण गतिविधियां:



23 अप्रैल 2019 को अंतरिक्ष भवन में भारत रत्न डॉ. बी.आर. अंबेडकर की 128वीं जन्म शताब्दी का आयोजन किया गया। इस उपलक्ष पर सभी कर्मचारियों के लिए एक निबंध प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया।

21 मई 2019 को अंतरिक्ष भवन में "आतंकवाद विरोधी दिवस" के अवसर पर शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन किया गया।



23 मई 2019 को न्यू स्पेस इंडिया लिमिटेड (एनसिल) कार्यालय का उद्घाटन किया गया।

20 अगस्त 2019 को अंतरिक्ष भवन में सद्भावना दिवस के उपलक्ष पर शपथ-ग्रहण समारोह का आयोजन किया।



• 01 सितंबर 2019 से 30 सितंबर 2019 तक अंतरिक्ष भवन में हिंदी माह का आयोजन किया गया, जिसके अंतर्गत कर्मचारियों एवं उनके परिवारजनों के लिए प्रतियोगिताएं आयोजित की

गई।

- 22 अक्टूबर 2019 को अंतरिक्ष भवन में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वावधान में संयुक्त हिंदी दिवस के अवसर पर नराकास (का-02), बेंगलूरु के सभी सदस्य कार्यालयों के लिए हिंदी निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।
- 28 अक्टूबर 2019 से 02 नवंबर 2019 के बीच अंतरिक्ष भवन में “सतर्कता जागरूकता सप्ताह” मनाया गया। इस वर्ष इस आयोजन का विषय था “सत्यनिष्ठा- जीवन का एक तरीका”। इस दौरान कई कार्यक्रम एवं प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। इस अवसर पर जस्टिस विश्वनाथ शेटी, लोकायुक्त, मुख्य अतिथि के रूप में अंतरिक्ष भवन में पधारे थे।



- हिंदी में आशुलिपि (शॉर्टहैंड) के जन्मदाता **राधेलाल द्विवेदी** हैं।
- **लोकसभा अध्यक्ष** अपने पद की शपथ नहीं लेते हैं।
- भारतीय संविधान के भाग-3 (मौलिक अधिकार) को **मैग्नाकार्टा** कहा जाता है।
- भारतीय संविधान में मौलिक अधिकार **अमेरिका** के संविधान से लिए गए हैं।
- भारत के राष्ट्रीय ध्वज का डिजाइन **पिंगली वेंकैया** ने तैयार किया था।

30 अक्टूबर 2019 को संयुक्त हिंदी माह का पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. कै. शिवन, सचिव, अंतरिक्ष विभाग/अध्यक्ष, इसरो थे। इस अवसर पर मुख्य अतिथि द्वारा विभिन्न पुरस्कार विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए गए, जिनमें हिंदी माह के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेता, मूल रूप से सरकारी काम-काज हिंदी में करने वाले प्रोत्साहन योजना के विजेतागण, 10वीं एवं 12वीं की अंतिम परीक्षा में हिंदी में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले छात्र, अंतरिक्ष भवन में राजभाषा हिंदी के उत्कृष्ट कार्यान्वयन में योगदान देने वाले कई पदाधिकारी तथा विभाग में प्रचलित “विक्रम साराभाई मौलिक हिंदी पुस्तक लेखन” योजना के तहत, लिखी गई किताबों के लेखक एवं उक्त हेतु गठित समिति के सदस्यगण शामिल थे।



हिंदी माह 2019 के दौरान प्रतिभागी भाग लेते हुए:-



- 31 अक्टूबर 2019 को अंतरिक्ष भवन में सरदार वल्लभभाई पटेल के जन्म दिवस पर "राष्ट्रीय एकता दिवस" मनाया गया। इस अवसर पर सभी कर्मचारियों को शपथ दिलाई गई। इस अवसर पर "रन फॉर यूनिटी" नामक एक कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया।



- 19 नवंबर 2019 से 25 नवंबर 2019 तक सांप्रदायिक सद्भावना अभियान सप्ताह तथा 25 नवंबर 2019 को "फ्लैग डे" का आयोजन किया गया।

- 26 नवंबर 2019 को अंतरिक्ष भवन में "संविधान दिवस" मनाया गया। इस अवसर पर भारतीय संविधान के निर्माताओं को याद किया गया तथा भारतीय संविधान की उद्देशिका को पढ़ा गया।



- अंतरिक्ष भवन में 10 जनवरी 2020 को "विश्व हिंदी दिवस" समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सभी अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए राजभाषा पर एक लिखित प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस सुअवसर पर राजभाषा के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए अंतरिक्ष भवन के अनुभागों को भी पुरस्कृत किया गया।



- 26 जनवरी 2020 को अंतरिक्ष भवन में 71वां गणतंत्र दिवस समारोह मनाया गया। इस अवसर पर सचिव, अं.वि./अध्यक्ष इसरो द्वारा राष्ट्र ध्वजारोहण किया गया तथा उनके द्वारा संबोधन भी दिया गया।



- अंतरिक्ष भवन में भारत के स्वतंत्रता संग्राम में अपने प्राणों की आहुति देने वाले शहीदों की स्मृति में 30 जनवरी 2020 को मौन धारण किया गया।

- 01-15 फरवरी 2020 के दौरान "स्वच्छता पखवाड़ा" मनाया गया तथा इस अवसर पर शपथ-ग्रहण का आयोजन किया गया। इस दौरान अंतरिक्ष विभाग के विभिन्न कार्यालयों एवं आवासीय कॉलोनियों में साफ-सफाई संबंधी क्रिया-कलाप किए गए।



- 21 मई 2020 को अंतरिक्ष भवन में "आतंकवाद विरोधी दिवस" मनाया गया तथा इस उपलक्ष पर सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को शपथ दिलाई गई।

शुभाकांक्षा

खुशहाल सेवानिवृत्त जीवन की शुभकामनाएं
मई 2019 से अप्रैल 2020 तक
अं.वि./इसरो मु. के अधिकारियों/कर्मचारियों की सूची: श्रीमती/श्री



एस. कुमारस्वामी
संयुक्त सचिव
अं.वि.
31.05.2019



शैलजा कृष्णमूर्ति
वै.सचिव.
इसरो मु.



जी. श्रीनाथ,
वैज्ञा./अभि.-जी.
इसरो मु.
31.05.2019



एच. उमाकांत
व. परि.सहायक
इसरो मु.
30.06.2019



आर.एस. चंद्रमोहन
वैज्ञा./अभि.-एस.जी
अं.वि.
30.06.2019



वृज मोहन
अ.श्रे.लि.
दि.सचि.
31.07.2019



आर.पी. पद्मनाभय्या
एस.सी.डी.-डी.
अं.वि.
31.07.2019



एन.डी. प्रभाकर
व.परि.सहायक
अं.वि.
31.07.2019



एस.गीता
व.परि.सहायक
अं.वि.
31.08.2019



जी.पी. उषारानी
परि.वैय. सचिव
इसरो मु.
31.08.2019



अश्वतप्पा
वैज्ञा./अभि.-एस.एफ.
इसरो मु.
31.09.2019



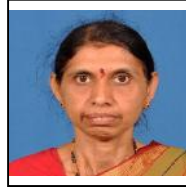
सुमित्रा देवी
व.परि.परिचारक
अं.वि.
31.10.2019



जी.एल. राजकुमारी
व.परि. सहायक
अं.वि.
30.11.2019



गायत्री देवी
परि.वैय. सचिव
अं.वि.
31.12.2019



आर. मालिनी
परि.वैय. सचिव
अं.वि.
31.01.2020



श्रीकुमार पी.
उत्कृष्ट वैज्ञानिक
इसरो मु.
31.01.2020



बी.एन. विश्वनाथ
कनिष्ठ अभियंता
अं.वि.
31.03.2020



प्रभाकर जी. हेगडे
वैज्ञा./अभि.-एस.ई.
अं.वि.
30.04.2020



ए. श्रीधर
परि.वैय. सचिव
अं.वि.
30.04.2020

शुभाकांक्षा

स्वागतम्

दिशा टीम इन सभी अधिकारियों/ कर्मचारियों का अंतरिक्ष भवन में हार्दिक स्वागत एवं उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करती है।



इंडला येडूकोंडालु
सहायक
अं.वि.
04.07.2019



पिंडी प्रदीप
सहायक
अं.वि.
22.07.2019



रवींद्र एच.
ल.वा.चा.-ए.
अं.वि.
26.07.2019



नंजेगौडा बी.आर.
ल.वा.चा.-ए.
अं.वि.
29.07.2019



अरिंदम दास
सहायक
अं.वि.
08.08.2019



जोवी वर्गिश
ल.वा.चा.-ए.
अं.वि.
16.08.2019



शुभम प्रजापति
सहायक
अं.वि.
19.08.2019



कुलदीप सिंह कुशवाहा
वैज्ञा./अभि.-एस.सी.
अं.वि.
30.08.2019



अवधेश कुमार शर्मा
तकनीशियन-बी.
अं.वि.
04.09.2019



राम अवतार पन्वर
वैज्ञा./अभि.-एस.सी.
अं.वि.
25.09.2019



विकास चौबे
वैज्ञा./अभि.-एस.सी.
अं.वि.
27.09.2019



तंगुतुरी प्रकाशम
तकनीशियन-बी.
अं.वि.
30.09.2019



इमामहुसैन मोमिन
ल.वा.चा.-ए.
अं.वि.
30.09.2019



दिलीप कुमार देहुरी
तकनीशियन-बी.
अं.वि.
09.10.2019



अन्वेषा पटेल
सहायक
अं.वि.
16.10.2019



नवनीतन टी.
ल.वा.चा.-ए.
अं.वि.
16.10.2019



दीक्षा
वैज्ञा./अभि.-एस.सी.
अं.वि.
13.11.2019



अनिमेष घोष
सहायक
अं.वि.
14.11.2019



नवीन कुमार शर्मा
उ.श्रे.लि.
अं.वि.
05.12.2019



रवि एम.एल.
ल.वा.चा.-ए.
अं.वि.
30.12.2019



प्रमोद सी.एल.
तकनीशियन-बी.
अं.वि.
10.01.2020



सवूमन एस.
तकनीशियन-बी.
अं.वि.
14.01.2020

“दिशा के 10वें अंक पर पाठकों की प्रतिक्रियाएं”

‘दिशा के 10वें अंक पर हमें अनेक प्रबुद्ध पाठकों की ढेर-सारी प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हुईं। जगह की कमी के कारण इन सभी प्रतिक्रियाओं को, उनके संक्षिप्त रूप में, यहाँ प्रकाशित किया गया है।

अंक में प्रकाशित तकनीकी लेख, कविताएं एवं आध्यात्मिक लेख सारगर्भित, सूचनापरक एवं ज्ञानोपयोगी हैं। सर्वप्रथम लेखकों को बधाई और पत्रिका की साज-सज्जा व कुशल संपादन के लिए रेल पहिया कारखाना की ओर से संपादक मंडल को शुभकामनाएं।

तिरमल सिंह, वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी, रेल पहिया कारखाना, बेंगलूर

संपादन कार्य सराहनीय है, पत्रिका के संपादक एवं पूरी टीम को हमारी ओर से बहुत-बहुत बधाई।

ए.वी. बालसुब्रमण्यम, प्रशासन अधिकारी, आई.एल.सी.-मुंबई

पत्रिका में शीर्षक “स्वाद, जनहित एवं प्रेरणा” इत्यादि में प्रकाशित लेख शिक्षाप्रद एवं रोचक ही नहीं अपितु प्रेरणादायक भी हैं व आम जीवन को प्रकृति के विभिन्न आयामों एवं उसकी महत्ता से परिचित कराते हैं। “मोबाइल में कैद” कविता आज के आधुनिक जीवन की व्यस्तता एवं व्यक्ति का भौतिकवाद / यंत्र निर्भरता की ओर मानसिक अवनयन को इंगित करती है।

प्रदीप कुमार शर्मा, प्रशासनिक अधिकारी, पी.आर.एल., अहमदाबाद

पत्रिका में प्रकाशित – जल की महत्ता, जैविक कृषि एवं स्वच्छता संबंधी लेख वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अत्यंत प्रासंगिक है।

ओ.पी. शर्मा, प्रशासनिक अधिकारी, राष्ट्रीय सुदूर संवेदन केंद्र, जोधपर

पत्रिका में कार्यालय की राजभाषा गतिविधियों के साथ-साथ विभिन्न साहित्यिक विधाओं का समावेश है।

मीनाक्षी सक्सेना, हिंदी अधिकारी, राष्ट्रीय सुदूर संवेदन केंद्र, हैदराबाद

पत्रिका में प्रकाशित लेख उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं। पत्रिका का संकलन, संपादन, प्रस्तुतीकरण बेहतरीन है। लेख, कविताएँ और अन्य महत्वपूर्ण जानकारियों का समायोजन अत्यंत रोचक तरीके से किया गया है। पत्रिका में केंद्र की राजभाषा गतिविधियों की सुंदर प्रस्तुति की गई है।

नीलू सेठ, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी, अंतरिक्ष उपयोग केंद्र, अहमदाबाद

पत्रिका में छपे सभी लेख बहुत ही सुंदर हैं और वैविध्यता लिए हुए हैं। विभाग में चल रही राजभाषा हिंदी की गतिविधियों का भी अच्छा चित्रण प्रस्तुत किया गया है। पत्रिका दिनोंदिन प्रगति-पथ पर अग्रसर हो, ऐसी कामना के साथ संपादक मंडल को शुभकामनाएँ।

डीनू रानी जी., वरिष्ठ हिंदी अधिकारी, एच.एस.एफ.सी., बेंगलूरु

पत्रिका में प्रकाशित सभी आलेख, कविताएं और तकनीकी लेख पठनीय, अत्यंत उपयोगी, सूचनापरक एवं ज्ञानवर्धक हैं। पत्रिका के संपादन से जुड़े सभी लोग बधाई के पात्र हैं।

टी. विजय शेखर, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक, इसरो नोदन कॉम्प्लेक्स, महेंद्रगिरि

हिंदी गृह पत्रिका "दिशा" के सभी लेख बहुत ही रोचक और आकर्षक हैं। इसमें कविता, आध्यात्म, योग, जनहित, स्वाद जैसे सभी विषयों में लेख प्रस्तुत किए गए हैं जो बहुत ही सराहनीय हैं।

अवनीश शुक्ला, प्रशासनिक अधिकारी, उत्तर-पूर्वी अंतरिक्ष उपयोग केंद्र, शिलांग

आपके प्रोत्साहन के लिए बहुत बहुत धन्यवाद



अंतरिक्ष विभाग/इसरो मु. के अब तक के संयुक्त निदेशक (रा.भा.)

श्याम सिंह

20-01-2004 से 30-06-2005



डॉ. पी. रवीन्द्र

07-01-2010 से 31-08-2012 तक



श्रीमती एस.एन. भाग्यलक्ष्मी

01-09-2012 से 28-12-2014 तक



श्री अशोक कुमार बिल्लूरे

06-03-2014 से 31-07-2016 तक



श्री बी.आर. राजपूत

17-08-2016 से 31-01-2017 तक



श्रीमती सरला

01 फरवरी 2017 से अब तक





अंतरिक्ष विभाग को लगातार पांचवीं बार राजभाषा कीर्ति पुरस्कार



हिंदी पखवाड़ा समारोह 2019



राजभाषा गतिविधियों की झलकियाँ